ESTD: 1962

3100

E @yahoo.com

ge.org

ISMAIL NATIONAL MAHILA PG COLLEGE, MEERUT

(Affiliated with C.C.S. University, Meerut, formerly Meerut University.
NAAC Accredited A Grade College

Summary Sheet-

Criteria	Criteria 03- Research, Innovations and Extension
Key Indicator	3.3 Research Publications and Awards
Metric	3.3.5- Bibliometrics of the publications during the last academic year based on average citation index in Scopus/ Web of Science or Pub Med/Indian Citation Index.
Response	14 research papers' detail with pics

Sr. No.	Name of the Author and Department	Title of the Research Paper	Title of the Journal	Level	ISSN/ISBN NO.	Year of publication	Impact Factor
1-	Dr Neelima Gupta, Department- **Drawing and Painting**	व्यावसाइकटा की और उन्मुख छत्तीस गढ़ की आदिवासी एवं लोक कला संस्कृति	International Journal of Research, ग्रंथालयः	International, Index Copernicus, Non-Peer Reviewed	ISSN: P: :2394-3629 E:2350-0530	November 2019	4.963
2-	Dr. Deepti Kaushik with Rubina Khanam Department- **Sociology**	मेरठ शहर में महिलाओं की शिक्षा के बदलते अयं और मुस्लिम महिलाओं की शिक्षा का समाजशास्त्रीय अध्ययन	शोध मंथन	International, Peer Reviewed & Refereed	ISSN P: 0976-5255 E: 2454-339X	Oct-Dec 2019	6.726 SJIF
3-	Dr. Shivali Agarwal with Kaushal Kishor Mishra Department- **Political Science**	पंडित दीन दयाल उपाध्याय का राष्ट्रवाद	भारतीय राजनीति विज्ञान शोध पत्र	National, Peer Reviewed	ISSN- 2229-452X	July-Dec. 2019	-
4-	Dr. Deepa Tyagi with Mamta Department- **Hindi**	आदिवासी लोक साहित्य में लोकगीत व नृत्य	साहित्यअमृतं	National, Refereed	ISSN-2230-8652	2019	-

5-	Dr. Parul Tyagi Department- **English**	The Political Perspective: Myth to Contemporaneity in an Abbreviated Child by Rita Garg	International Journal of English and Literature (IJEL)	International, Peer Reviewed	ISSN-(online)2249-8028, ISSN (Print) 2249-6912	February 2020	JCC (2020) 6.8152, Index Copernicus Value (2016) 62.92, NAAS 3.12
6-	Dr Mamta Gautam, Department- **Physical Education**	पश्चिम एशिआई देशों में: खेलों का अध्ययन	Advanced Science Letters	International, Peer Reviewed	ISSN-1936-7317	February 2020	-
7-	Dr Vineta with Anil Km Department- **Psychology**	Effect of Personality Type and Gender on the Level of Anxiety in B.P. Patients	International Journal of Applied Research	International, Peer Reviewed	ISSN-2394-7500, E-ISSN-2394-5869	April 2020	5.2
8-	Dr Vineta with Anil km	Effect of Personality Type	International Journal of Academic	International, Peer Reviewed	ISSN- 2455-4197	2020	5.22

	Department- **Psychology**	and Age on the Level of Anxiety in B.P. Patients	Research and Development				
9-	Dr. Shubhra Tripathi Department- **Sociology**	Covid -19: Analysing the Impact and Effect of the Pandemic on Indian Society	सुरक्षा चिंतन	National, Peer Reviewed, Refereed	ISSN-0976-3163	Jan-July 2020	5.229 (SJIF)
10-	Dr Aanchal Singh, Department- **Drawing and Painting**	भारतीय कला में लोक कला का महत्व	International Journal of Research, ग्रंथालयः	International, Index Copernicus, Non-Peer Reviewed	ISSN (0)-2350-0530, ISSN(P)-2394-3629	November 2019	4.963
11-	Dr Mamta Singh with Dr Kavita Garg Department- **Economics**	In Contemporary Context a General Comparison between the Philosophy of Mahatma Gandhi	UPUEA Economic Journal	Non-Peer Reviewed	ISSN:0975-2382	November 2019	-

		and Pandit Deen Dayal					
12-	Dr Sapna Sharma Department- **Sanskrit**	आचार्य कौटिल्य के अर्थशास्त्र में वर्णित धार्मिक एवं नैतिक व्यवस्था तथा वर्तमान में इसकी प्रासंगिकता	साहित्यअमृतं	National, refereed	ISSN-2230-8652	December 2019	-
13-	Dr Babita Sharma Department- **Drawing and Painting**	भारतीय चित्रकला की विविध तकनीक	International Journal of Research, ग्रंथालयः	International, Index Copernicus, Non-Peer Reviewed	ISSN: P: :2394-3629 E:2350-0530	November 2019	4.963
14-	Dr Anju Bala Rajput, Department- **B.Ed.**	मेरठ शहर में प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना के तहत संचालित केंद्रों का आलोचनात्मक अध्ययन	Printing Area	International, Peer Reviewed, refereed,	ISSN-2394-5303	September 2019	6.039

Dr NEELIMA GUPTA

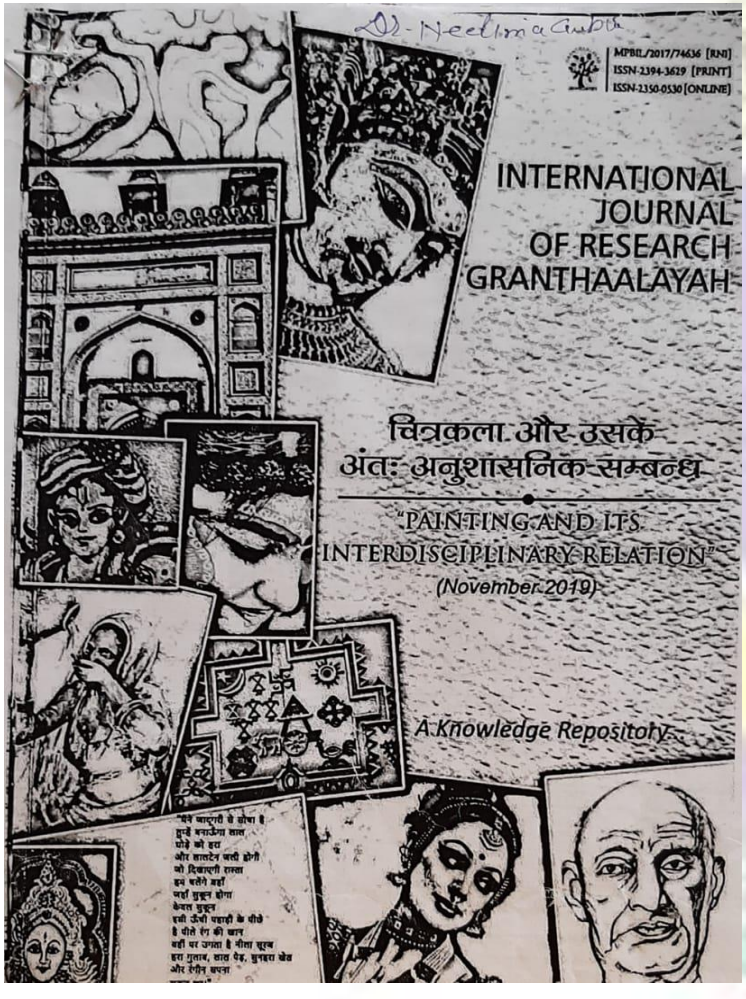

Table of Content

S. No.	Title	Author Name	Page No
1.	मांडना में विभिन्न चौक परम्परा	डॉ. कुमकुम भारद्वाज	1-3
2.	चित्रकला में साहित्य/साहित्य में चित्रकला	डॉ. शोभना जोशी	3-6
3.	आदिवासी अंग आरेखन कला - गुदना	डॉ. सुषमा जैन	7-8
4.	चित्रकला की एक तकनीक - मेरी कोलाज कला	डॉ. यतीन्द्र महोबे	9-10
5.	भित्ति चित्रांकन संजा (मालवा-निमाड़ के विशेष संदर्भ में)	डॉ. ज्योति ढोले	10-12
6.	समाज एवं कला	डॉ. निशा जैन	12-13
7.	मध्यप्रदेश की लोक चित्रकला- एक परिचय	देवेन्द्रसिंह ठाकुर	14-17
8.	बारेला जनजाति की लोक कलाएँ	डॉ. आनन्दसिंह पटेल	17-21
9.	मध्यकालीन भारतीय लघु चित्रण शैलियों के चित्रों में कलात्मक हाशियों का अंकन एवं महत्वः एक अध्ययन	डॉ. मंजुला निंगवाल	21-23
10.	समकालीन चित्रकला में किशनचन्द आर्यन जी का योगदान	डॉ. अनन्ता शाँडिल्य	23-26
11.	भारतवर्ष में विविध कालीन चित्रकला का स्वरूप	डॉ. साधना चौहान, मोनालिसा राजौरा	27-28
12.	राजपूत-चित्रकला (राजस्थान) मेवाड शैली	डॉ. उषा महोबिया	28-30
13.	प्राचीन भारतीय ग्रन्थ में चित्रकला उल्लेख	निशा माहौर	30-32
14.	कला और समाज का अर्न्तसम्बन्ध	आशुतोष कुमार सोनिया	32-34
15.	मधुबनी लोक चित्रकला पर समकालीन प्रभाव	चरनजीत सिंह	34-37
16.	कला और मनोविज्ञान का सम्बन्ध	डॉ. पूनम	37-40
17.	भारतीय कला में लोककला का महत्व	श्रीमती आँचल सिंह	40-43
18.	काव्यचित्र एवं चित्रकाव्य	अनीता जोशी	44-47
19.	व्यवसायिकता की ओर उन्मुख छत्तीसगढ़ की आदिवासी एवं लोक कला संस्कृति	डॉ. नीलिमा गुप्ता	47-51
20.	वनस्पतियों के मापन और आकारों में विभिन्नताएँ एवं रंगों के संयोजन का तुलनात्मक अध्ययन	डॉ. शोभा शर्मा	51-54
21.	जैन संस्कृति/धर्म में चित्रकला-मण्डल विधान के विशेष संदर्भ में	डॉ. निशा मोदी	54-57
22.	संगीत का चित्रकला से संबंध	डॉ. पूर्वी निमगांवकर	57-58
23.	काँच पर चित्रकला की विविध तकनीक	डॉ. कुमकुम भारद्वाज, प्रवीण कुमार माठे	59-60
24.	मिर्जापुर के पुरा शैल चित्र स्थल	आकांक्षा सिंह, प्रो. के. रतनम	61-64
25.	लौकिक संस्कृत साहित्य में सौन्दर्य शास्त्रीय चिन्तन का स्वरूप	डॉ. श्रुति कक्कर	64-67
26.	चित्रकार विष्णु चिंचालकर का कला संसार	डॉ. रश्मि जोशी,	67-69

Dr DEEPTI KAUSHIK

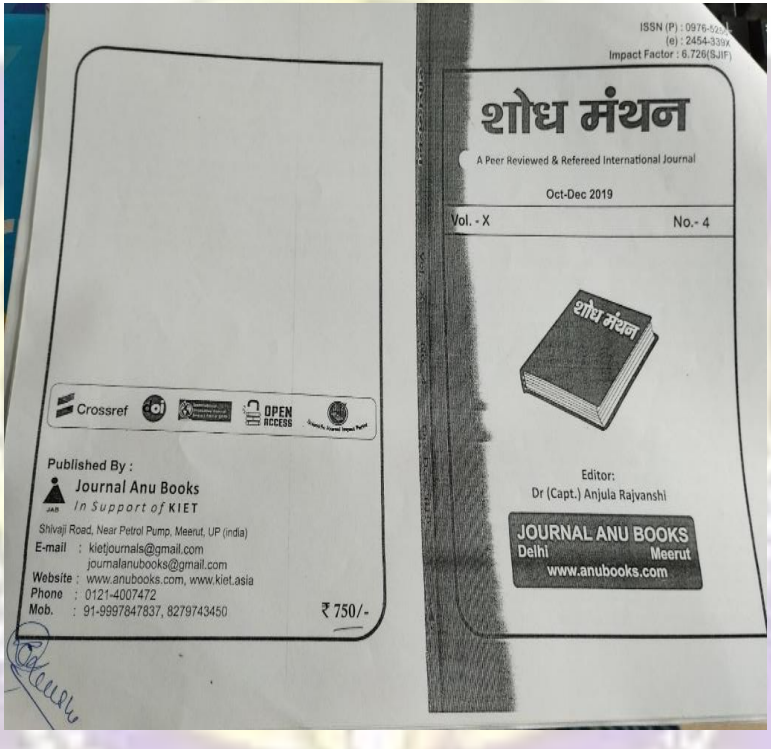

Crossref · doi · OPEN ACCESS

Published By :
Journal Anu Books
In Support of KIET
Shivaji Road, Near Petrol Pump, Meerut, UP (india)
E-mail : kietjournals@gmail.com
journalanubooks@gmail.com
Website : www.anubooks.com, www.kiet.asia
Phone : 0121-4007472
Mob. : 91-9997847837, 8279743450

₹ 750/-

ISSN (P) : 0976-525
(e) : 2454-339X
Impact Factor : 6.726(SJIF)

शोध मंथन

A Peer Reviewed & Refereed International Journal

Oct-Dec 2019

Vol. - X No.- 4

Editor:
Dr (Capt.) Anjula Rajvanshi

JOURNAL ANU BOOKS
Delhi Meerut
www.anubooks.com

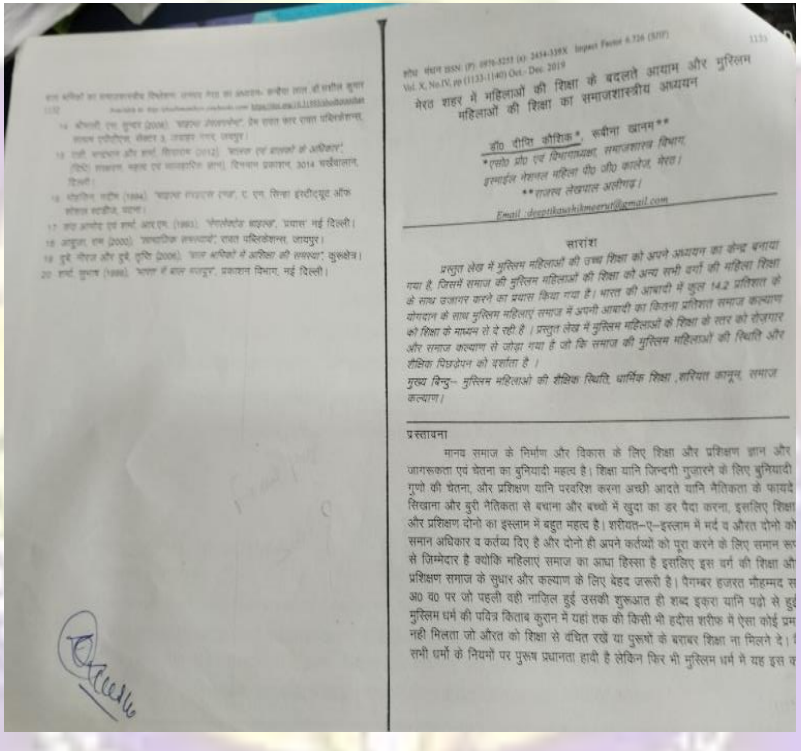

[illegible] 1132 [illegible]

14 श्रीमाली, एस. कुमार (2006), "[illegible]", [illegible] जयपुर।

15 [illegible] (2012), "बालक एवं बालकों के अधिकार", [illegible] 2014 [illegible] दिल्ली।

16 [illegible] (1994), "[illegible]", ए. एन. सिन्हा इंस्टीट्यूट ऑफ सोशल स्टडीज, पटना।

17 [illegible] (1983), "[illegible]", 'प्रयास' नई दिल्ली।

18 आहूजा, राम (2000), "सामाजिक समस्यायें", रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर।

19 दुबे, नीरज और दुबे, तृप्ति (2006), "बाल श्रमिकों में अशिक्षा की समस्या", कुरुक्षेत्र।

20 शर्मा, सुभाष (1988), "भारत में बाल मजदूर", प्रकाशन विभाग, नई दिल्ली।

शोध संधान ISSN (P) 0976-5255 (e) 2454-339X Impact Factor 6.726 (SJIF)
Vol. X, No.IV, pp (1133-1140) Oct.- Dec. 2019

मेरठ शहर में महिलाओं की शिक्षा के बदलते आयाम और मुस्लिम महिलाओं की शिक्षा का समाजशास्त्रीय अध्ययन

डॉ० दीप्ति कौशिक*, रूबीना खानम**

*एसो० प्रो० एवं विभागाध्यक्षा, समाजशास्त्र विभाग, इस्माईल नेशनल महिला पी० जी० कालेज, मेरठ।

**राजस्व लेखपाल अलीगढ़।

Email :deeptikaushikmeerut@gmail.com

सारांश

प्रस्तुत लेख में मुस्लिम महिलाओं की उच्च शिक्षा को अपने अध्ययन का केन्द्र बनाया गया है, जिसमें समाज की मुस्लिम महिलाओं की शिक्षा को अन्य सभी वर्गों की महिला शिक्षा के साथ उजागर करने का प्रयास किया गया है। भारत की आबादी में कुल 14.2 प्रतिशत के योगदान के साथ मुस्लिम महिलाएं समाज में अपनी आबादी का कितना प्रतिशत समाज कल्याण को शिक्षा के माध्यम से दे रही है । प्रस्तुत लेख में मुस्लिम महिलाओं के शिक्षा के स्तर को रोजगार और समाज कल्याण से जोड़ा गया है जो कि समाज की मुस्लिम महिलाओं की स्थिति और शैक्षिक पिछड़ेपन को दर्शाता है ।

मुख्य बिन्दु– मुस्लिम महिलाओं की शैक्षिक स्थिति, धार्मिक शिक्षा ,शरियत कानून, समाज कल्याण।

प्रस्तावना

मानव समाज के निर्माण और विकास के लिए शिक्षा और प्रशिक्षण ज्ञान और जागरूकता एवं चेतना का बुनियादी महत्व है। शिक्षा यानि जिन्दगी गुजारने के लिए बुनियादी गुणो की चेतना, और प्रशिक्षण यानि परवरिश करना अच्छी आदते यानि नैतिकता के फायदे सिखाना और बुरी नैतिकता से बचाना और बच्चो में खुदा का डर पैदा करना, इसलिए शिक्षा और प्रशिक्षण दोनो का इस्लाम में बहुत महत्व है। शरीयत–ए–इस्लाम में मर्द व औरत दोनो को समान अधिकार व कर्तव्य दिए है और दोनो ही अपने कर्तव्यों को पूरा करने के लिए समान रू से जिम्मेदार है क्योकि महिलाएं समाज का आधा हिस्सा है इसलिए इस वर्ग की शिक्षा औ प्रशिक्षण समाज के सुधार और कल्याण के लिए बेहद जरूरी है। पैगम्बर हजरत मौहम्मद स अ० व० पर जो पहली वही नाजिल हुई उसकी शुरूआत ही शब्द इकरा यानि पढ़ो से हु मुस्लिम धर्म की पवित्र किताब कुरान में यहां तक की किसी भी हदीस शरीफ मे ऐसा कोई प्रम नही मिलता जो औरत को शिक्षा से वंचित रखे या पुरूषों के बराबर शिक्षा ना मिलने दे। सभी धर्मों के नियमों पर पुरूष प्रधानता हावी है लेकिन फिर भी मुस्लिम धर्म मे यह इस क

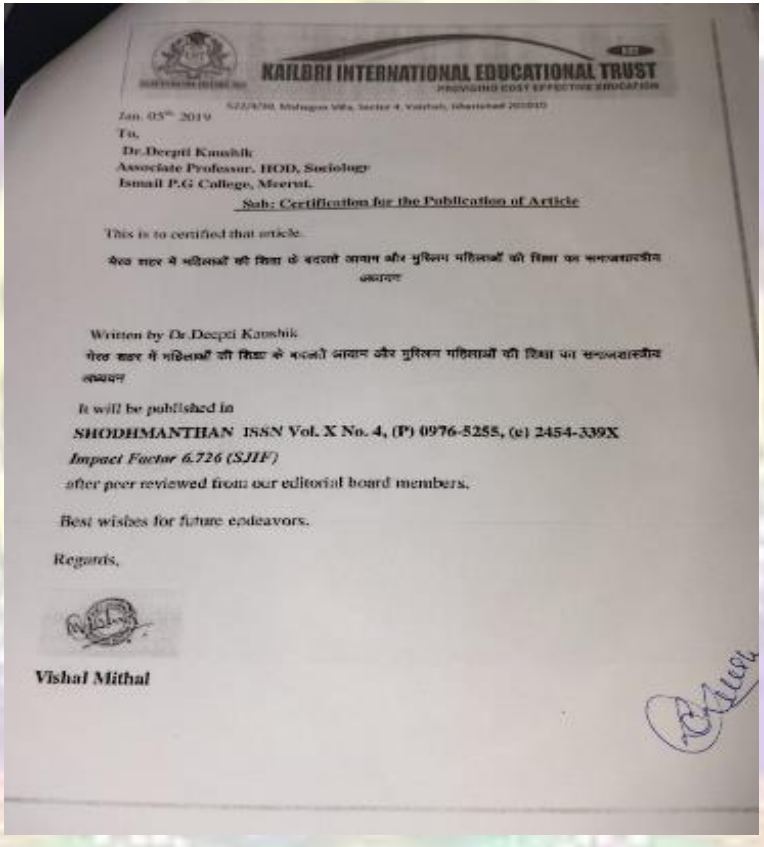

KAILBRI INTERNATIONAL EDUCATIONAL TRUST

PROVIDING COST EFFECTIVE EDUCATION

Jan. 05th 2019

To,

Dr.Deepti Kaushik
Associate Professor, HOD, Sociology
Ismail P.G College, Meerut.

Sub: Certification for the Publication of Article

This is to certified that article.

मेरठ शहर में महिलाओं की शिक्षा के बदलते आयाम और मुस्लिम महिलाओं की शिक्षा का समाजशास्त्रीय अध्ययन

Written by Dr.Deepti Kaushik

मेरठ शहर में महिलाओं की शिक्षा के बदलते आयाम और मुस्लिम महिलाओं की शिक्षा का समाजशास्त्रीय अध्ययन

It will be published in

SHODHMANTHAN ISSN Vol. X No. 4, (P) 0976-5255, (e) 2454-339X

Impact Factor 6.726 (SJIF)

after peer reviewed from our editorial board members.

Best wishes for future endeavors.

Regards,

Vishal Mithal

DR.SHIVALI AGGARWAL

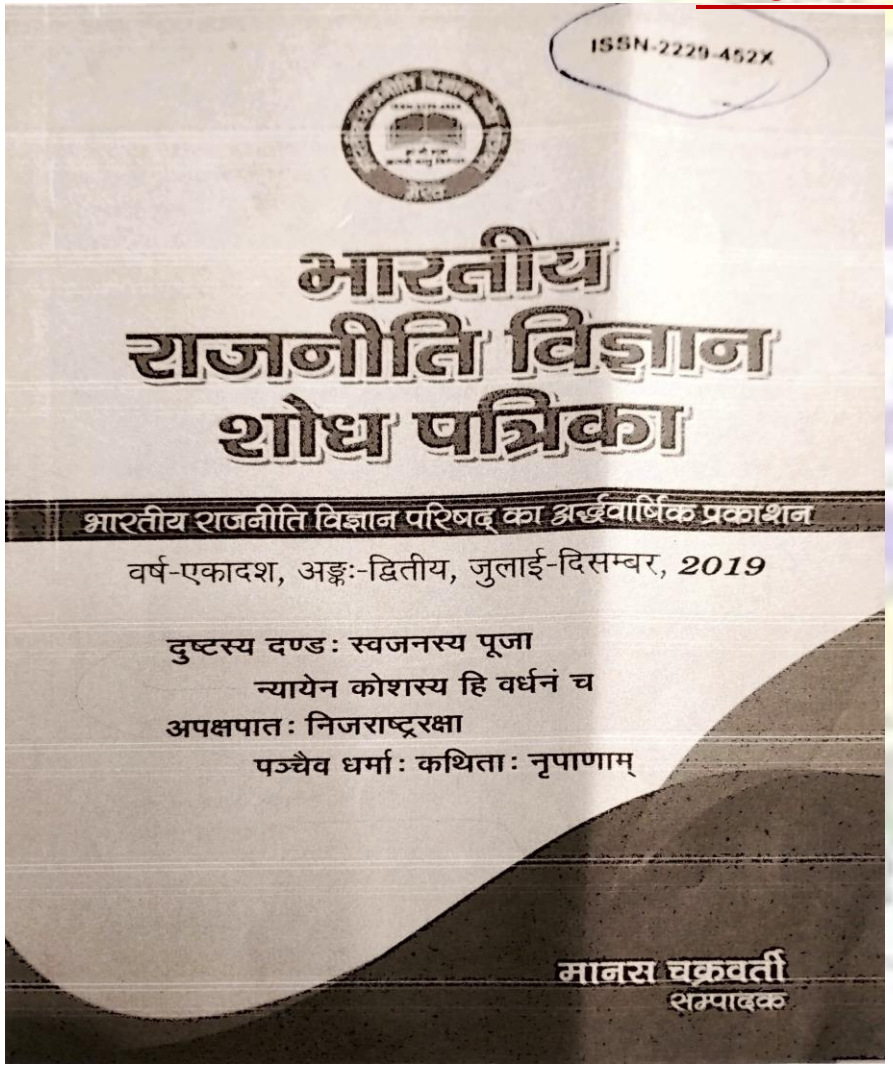

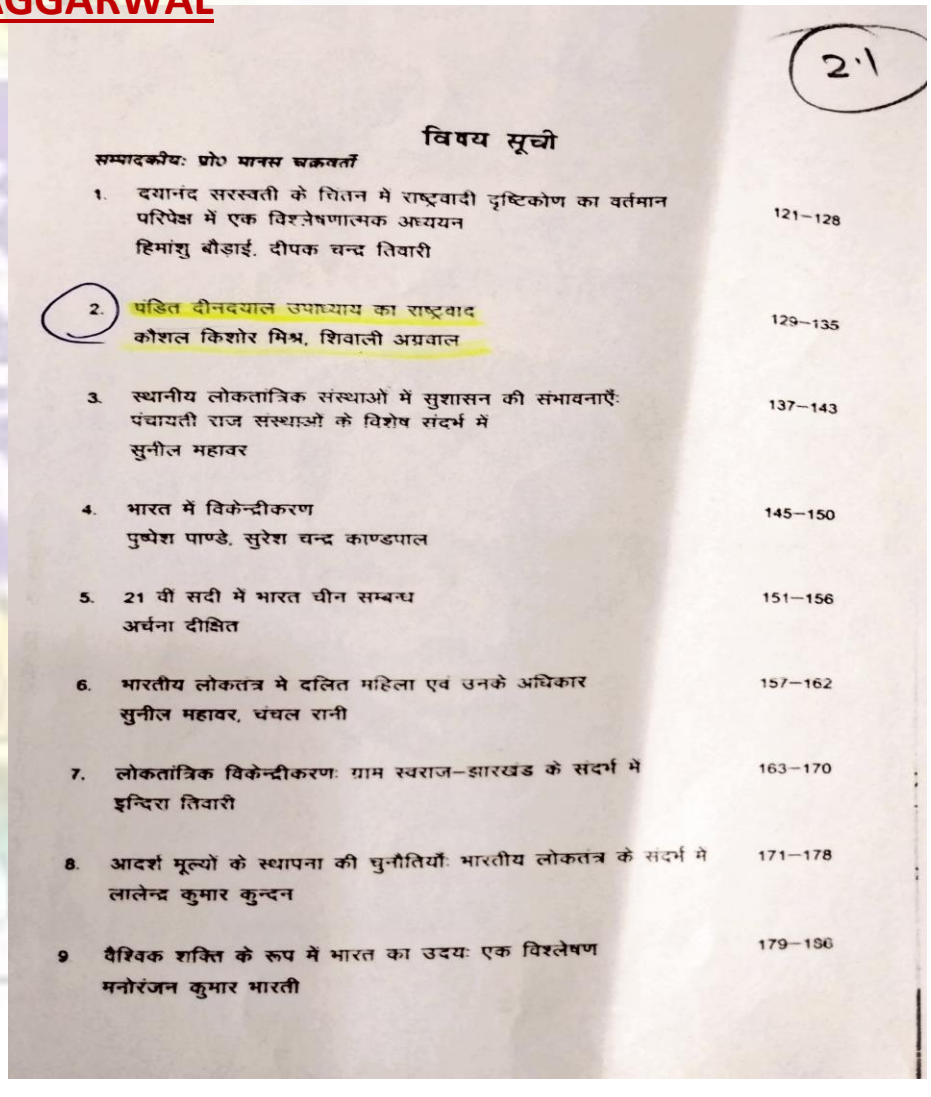

ISSN-2229-452X

भारतीय राजनीति विज्ञान शोध पत्रिका

भारतीय राजनीति विज्ञान परिषद् का अर्द्धवार्षिक प्रकाशन

वर्ष-एकादश, अङ्कः-द्वितीय, जुलाई-दिसम्बर, 2019

दुष्टस्य दण्डः स्वजनस्य पूजा
न्यायेन कोशस्य हि वर्धनं च
अपक्षपातः निजराष्ट्ररक्षा
पञ्चैव धर्माः कथिताः नृपाणाम्

मानस चक्रवर्ती
सम्पादक

2·1

विषय सूची

सम्पादकीय: प्रो० मानस चक्रवर्ती

1. दयानंद सरस्वती के चिंतन मे राष्ट्रवादी दृष्टिकोण का वर्तमान परिपेक्ष में एक विश्लेषणात्मक अध्ययन — 121–128
हिमांशु बौड़ाई, दीपक चन्द तिवारी

2. पंडित दीनदयाल उपाध्याय का राष्ट्रवाद — 129–135
कौशल किशोर मिश्र, शिवाली अग्रवाल

3. स्थानीय लोकतांत्रिक संस्थाओं में सुशासन की संभावनाएँ: पंचायती राज संस्थाओं के विशेष संदर्भ में — 137–143
सुनील महावर

4. भारत में विकेन्द्रीकरण — 145–150
पुष्पेश पाण्डे, सुरेश चन्द्र काण्डपाल

5. 21 वीं सदी में भारत चीन सम्बन्ध — 151–156
अर्चना दीक्षित

6. भारतीय लोकतन्त्र मे दलित महिला एवं उनके अधिकार — 157–162
सुनील महावर, चंचल रानी

7. लोकतांत्रिक विकेन्द्रीकरण: ग्राम स्वराज–झारखंड के संदर्भ मे — 163–170
इन्दिरा तिवारी

8. आदर्श मूल्यों के स्थापना की चुनौतियाँ: भारतीय लोकतन्त्र के संदर्भ मे — 171–178
लालेन्द्र कुमार कुन्दन

9 वैश्विक शक्ति के रूप में भारत का उदय: एक विश्लेषण — 179–186
मनोरंजन कुमार भारती

अनुक्रमणिका

1. आदिवासी लोक साहित्य में लोकगीत व नृत्य — 1
डॉ0 दीपा त्यागी, शोधार्थी–ममता

2. नागार्जुन के उपन्यासों में नारी के विविध रूप — 9
डॉ0 बीना शर्मा, शोधार्थी–वीणा शर्मा

3. काल विभाजन एवं नामकरण के पीछे का इतिहास — 19
डॉ0 विजय बहादुर त्रिपाठी

4. प्रभा खेतान के साहित्य में निज अस्मिता का स्वर — 25
डॉ0 अलूपी राणा

5. संस्कृत साहित्य में नारी संस्कृति — 32
कु0 अनुराधा

6. ज्ञान योग की सात अवस्थाएँ — 43
डॉ0 सविता वशिष्ठ

7. आचार्य कौटिल्य के अर्थशास्त्र में वर्णित धार्मिक एवं नैतिक व्यवस्था तथा वर्तमान में इसकी प्रासंगिकता — 56
डॉ0 सपना शर्मा

DR. DEEPA TYAGI

1

आदिवासी लोक साहित्य में लोकगीत व नृत्य

डॉ0 दीपा त्यागी
एसोसिएट प्रो0 हिन्दी विभागाध्यक्षा
शोधार्थी–ममता
इस्माईल नेशनल महिला पी0जी0 कॉलिज, मेरठ

आदिवासी शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है आदि और वासी अर्थात् यहाँ का मूल निवासी जो सदियों से जंगल में रहकर अपना जीवन यापन कर रहा है। भारत के प्रमुख आदिवासी समुदायों में संथाल, गोंड, मुंडा, हो, बोहों, भील, खासी, सहरिया, गरासिया, सीणा, उरांव किरहोर आदि आते हैं, जो आज भी अपनी संस्कृति को लोकगीतों, कथाओं, कहावतों, मुहावरों आदि वाचिक रूप में संजोये हुए हैं जैसा कि सर्वविदित है आदिवासियों का लोक साहित्य मौखिक रूप में अत्यन्त समृद्ध है। लोक साहित्य को अंग्रेजी में 'फोक लिटरेचर' कहा जाता है।

आदिवासी साहित्य क्या है? यह जानने के लिए आदिवासियों के इतिहास को जानना आवश्यक है लेकिन इतिहास ने तो आदिवासियों को उपेक्षित कर रखा है, जो भी साहित्य हमें उपलब्ध होता है वह शोषित, उपेक्षित व बहिष्कृत वर्ग का प्रतिनिधित्व करने वाला साहित्य है। "प्रसिद्ध आदिवासी विमर्शकार **डॉ0 विनायक तुकाराम** के अनुसार, आदिवासी साहित्य वन संस्कृति से सम्बन्धित साहित्य है आदिवासी साहित्य उन वन जंगलों में रहने वाले वंचितों का साहित्य है जिनके प्रश्नों का अतीत में कभी उत्तर ही नहीं दिया गया। यह ऐसे दुर्लक्षितों का साहित्य है जिनके आक्रोश पर मुख्य धारा की समाज व्यवस्था ने कभी कान ही नहीं धरे। यह गिरि, कन्दराओं में रहने वाले अन्याय ग्रस्तों का क्रान्ति साहित्य है। सदियों से जारी क्रूर और कठोर न्याय व्यवस्था ने जिनकी सैकड़ों पीढ़ियों को आजीवन वनवास दिया, उस आदिम समूह की मुक्ति का साहित्य है "आदिवासी साहित्य।"[1] वास्तव में आदिवासियों के बारे में इतिहासकारों, साहित्यकारों, समाज के चिंतकों ने लम्बे समय से यही धारणा बना रखी है कि यह जंगलों में रहने वाला कन्दराओं, गिरि पर निवास करने वाला आदिवासी है जिसका इस देश से कोई सरोकार नहीं है वह मुख्य धारा से अलग है, जबकि आदिवासी साहित्य जनवादी

DR PARUL TYAGI

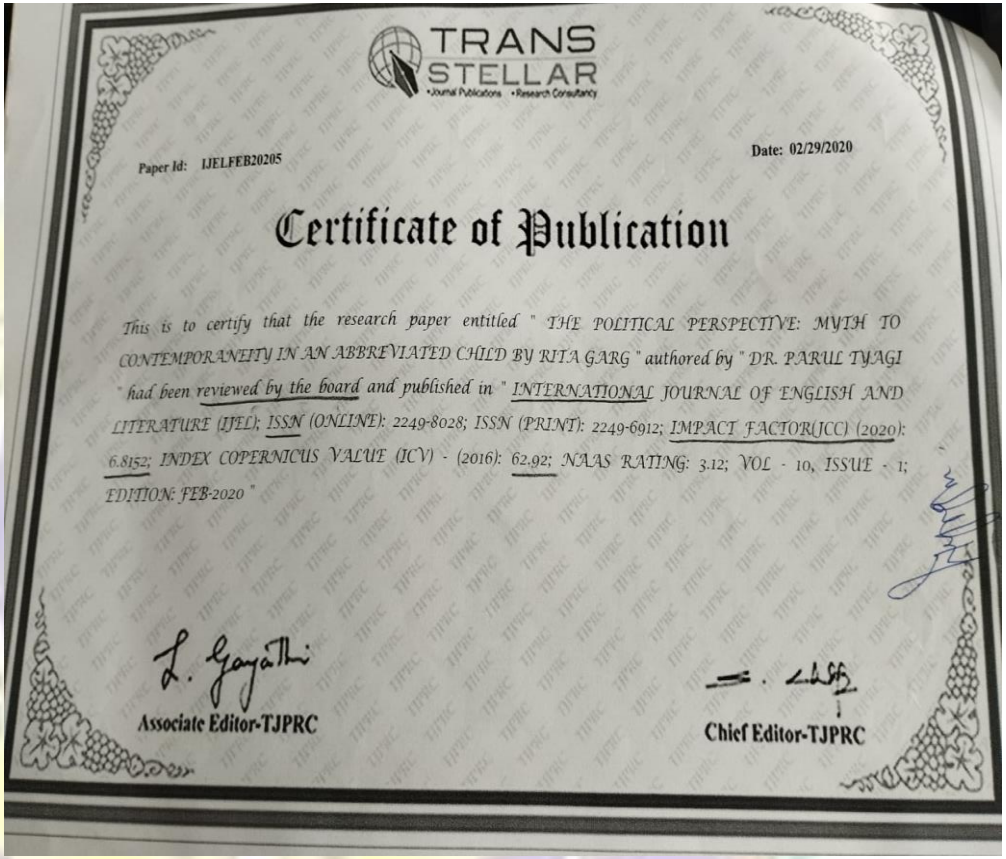

TRANS STELLAR
•Journal Publications •Research Consultancy

Paper Id: IJELFEB20205

Date: 02/29/2020

Certificate of Publication

This is to certify that the research paper entitled " THE POLITICAL PERSPECTIVE: MYTH TO CONTEMPORANEITY IN AN ABBREVIATED CHILD BY RITA GARG " authored by " DR. PARUL TYAGI " had been reviewed by the board and published in " INTERNATIONAL JOURNAL OF ENGLISH AND LITERATURE (IJEL); ISSN (ONLINE): 2249-8028; ISSN (PRINT): 2249-6912; IMPACT FACTOR(JCC) (2020): 6.8152; INDEX COPERNICUS VALUE (ICV) - (2016): 62.92; NAAS RATING: 3.12; VOL - 10, ISSUE - 1; EDITION: FEB-2020 "

L. Gayathri

Associate Editor-TJPRC

Chief Editor-TJPRC

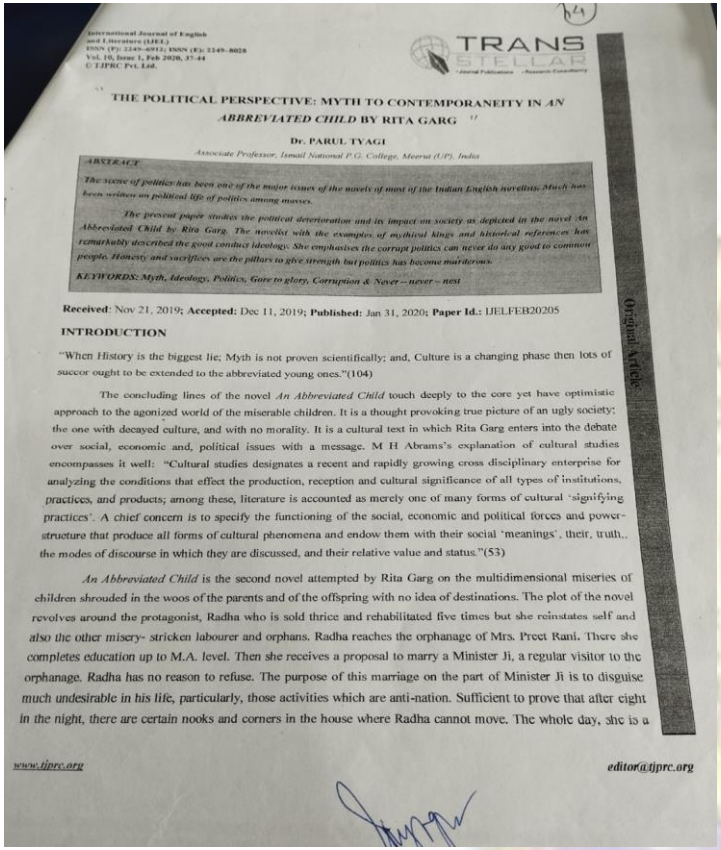

International Journal of English and Literature (IJEL)
ISSN (P): 2249–6912; ISSN (E): 2249–8028
Vol. 10, Issue 1, Feb 2020, 37–44
© TJPRC Pvt. Ltd.

TRANS STELLAR

THE POLITICAL PERSPECTIVE: MYTH TO CONTEMPORANEITY IN *AN ABBREVIATED CHILD* BY RITA GARG

Dr. PARUL TYAGI
Associate Professor, Ismail National P.G. College, Meerut (U.P), India

ABSTRACT

The theme of politics has been one of the major issues of the novels of most of the Indian English novelists. Much has been written on political life of politics among masses.

The present paper studies the political deterioration and its impact on society as depicted in the novel An Abbreviated Child by Rita Garg. The novelist with the examples of mythical kings and historical references has remarkably described the good conduct ideology. She emphasises the corrupt politics can never do any good to common people. Honesty and sacrifices are the pillars to give strength but politics has become murderous.

KEYWORDS: *Myth, Ideology, Politics, Gone to glory, Corruption & Never – never – nest*

Received: Nov 21, 2019; **Accepted:** Dec 11, 2019; **Published:** Jan 31, 2020; **Paper Id.:** IJELFEB20205

Original Article

INTRODUCTION

"When History is the biggest lie; Myth is not proven scientifically; and, Culture is a changing phase then lots of succor ought to be extended to the abbreviated young ones."(104)

The concluding lines of the novel *An Abbreviated Child* touch deeply to the core yet have optimistic approach to the agonized world of the miserable children. It is a thought provoking true picture of an ugly society: the one with decayed culture, and with no morality. It is a cultural text in which Rita Garg enters into the debate over social, economic and, political issues with a message. M H Abrams's explanation of cultural studies encompasses it well: "Cultural studies designates a recent and rapidly growing cross disciplinary enterprise for analyzing the conditions that effect the production, reception and cultural significance of all types of institutions, practices, and products; among these, literature is accounted as merely one of many forms of cultural 'signifying practices'. A chief concern is to specify the functioning of the social, economic and political forces and power-structure that produce all forms of cultural phenomena and endow them with their social 'meanings', their, truth,, the modes of discourse in which they are discussed, and their relative value and status."(53)

An Abbreviated Child is the second novel attempted by Rita Garg on the multidimensional miseries of children shrouded in the woos of the parents and of the offspring with no idea of destinations. The plot of the novel revolves around the protagonist, Radha who is sold thrice and rehabilitated five times but she reinstates self and also the other misery- stricken labourer and orphans. Radha reaches the orphanage of Mrs. Preet Rani. There she completes education up to M.A. level. Then she receives a proposal to marry a Minister Ji, a regular visitor to the orphanage. Radha has no reason to refuse. The purpose of this marriage on the part of Minister Ji is to disguise much undesirable in his life, particularly, those activities which are anti-nation. Sufficient to prove that after eight in the night, there are certain nooks and corners in the house where Radha cannot move. The whole day, she is a

Dr Mamta Gautam

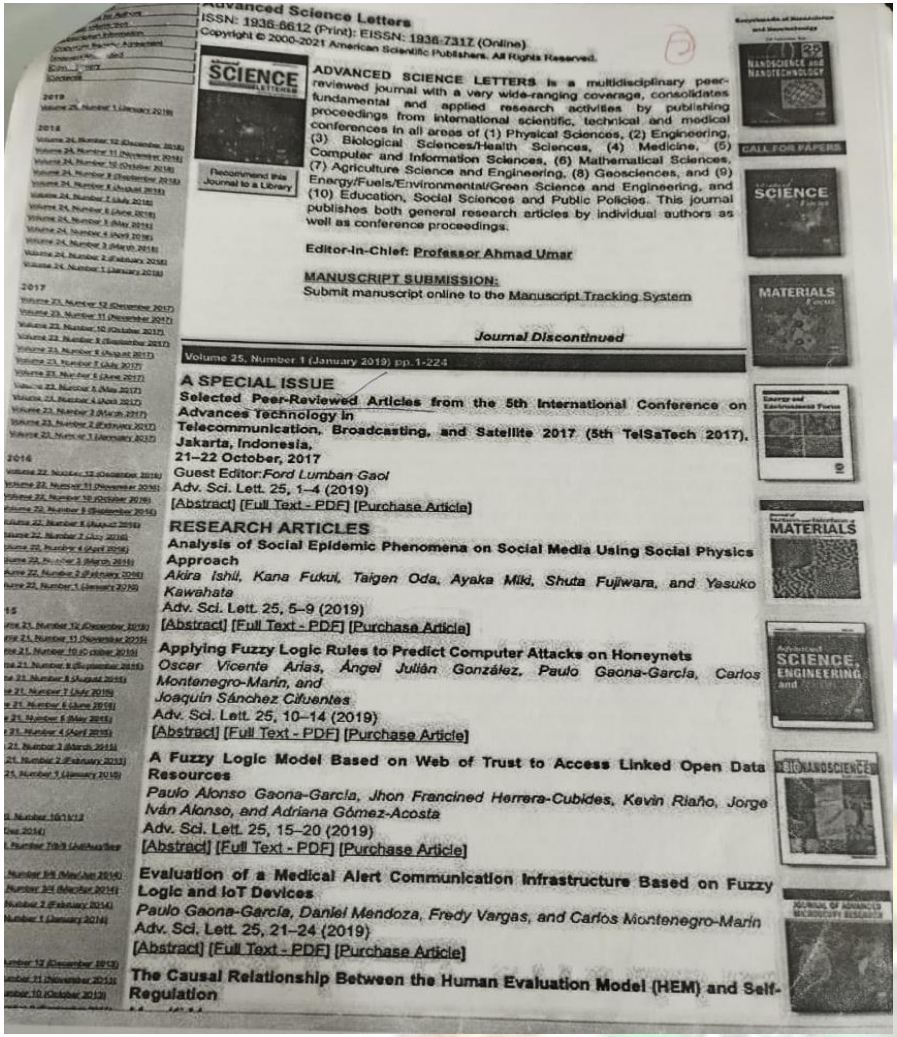

Advanced Science Letters

ISSN: 1936-6612 (Print); EISSN: 1936-7317 (Online)

Copyright © 2000-2021 American Scientific Publishers. All Rights Reserved.

ADVANCED SCIENCE LETTERS is a multidisciplinary peer-reviewed journal with a very wide-ranging coverage, consolidates fundamental and applied research activities by publishing proceedings from international scientific, technical and medical conferences in all areas of (1) Physical Sciences, (2) Engineering, (3) Biological Sciences/Health Sciences, (4) Medicine, (5) Computer and Information Sciences, (6) Mathematical Sciences, (7) Agriculture Science and Engineering, (8) Geosciences, and (9) Energy/Fuels/Environmental/Green Science and Engineering, and (10) Education, Social Sciences and Public Policies. This journal publishes both general research articles by individual authors as well as conference proceedings.

Editor-In-Chief: Professor Ahmad Umar

MANUSCRIPT SUBMISSION:
Submit manuscript online to the Manuscript Tracking System

Journal Discontinued

Volume 25, Number 1 (January 2019) pp.1-224

A SPECIAL ISSUE
Selected Peer-Reviewed Articles from the 5th International Conference on Advances Technology in Telecommunication, Broadcasting, and Satellite 2017 (5th TelSaTech 2017), Jakarta, Indonesia, 21–22 October, 2017
Guest Editor: *Ford Lumban Gaol*
Adv. Sci. Lett. 25, 1–4 (2019)
[Abstract] [Full Text - PDF] [Purchase Article]

RESEARCH ARTICLES

Analysis of Social Epidemic Phenomena on Social Media Using Social Physics Approach
Akira Ishii, Kana Fukui, Taigen Oda, Ayaka Miki, Shuta Fujiwara, and Yasuko Kawahata
Adv. Sci. Lett. 25, 5–9 (2019)
[Abstract] [Full Text - PDF] [Purchase Article]

Applying Fuzzy Logic Rules to Predict Computer Attacks on Honeynets
Oscar Vicente Arias, Ángel Julián González, Paulo Gaona-García, Carlos Montenegro-Marín, and Joaquín Sánchez Cifuentes
Adv. Sci. Lett. 25, 10–14 (2019)
[Abstract] [Full Text - PDF] [Purchase Article]

A Fuzzy Logic Model Based on Web of Trust to Access Linked Open Data Resources
Paulo Alonso Gaona-García, Jhon Francined Herrera-Cubides, Kevin Riaño, Jorge Iván Alonso, and Adriana Gómez-Acosta
Adv. Sci. Lett. 25, 15–20 (2019)
[Abstract] [Full Text - PDF] [Purchase Article]

Evaluation of a Medical Alert Communication Infrastructure Based on Fuzzy Logic and IoT Devices
Paulo Gaona-García, Daniel Mendoza, Fredy Vargas, and Carlos Montenegro-Marín
Adv. Sci. Lett. 25, 21–24 (2019)
[Abstract] [Full Text - PDF] [Purchase Article]

The Causal Relationship Between the Human Evaluation Model (HEM) and Self-Regulation

Advanced Science Letters
E-ISSN:1936-7317

(2) 19-20

पश्चिम एशियाई देशों में: खेलों का अध्ययन

डॉ० ममता
विभागाध्यक्षा शारीरिक शिक्षा
इस्माईल नेशनल महिला पी०जी० कॉलिज, मेरठ

सारांश

पश्चिम एशियाई खेल जिसे WAG और पूर्व पश्चिम एशियाई खेल महासंघ (WAGF) के नाम से जाना जाता है। पश्चिमी एशिया के एथलीटों के बीच हर चार साल में आयोजित एक बहुआयामी–खेल प्रतियोगिता कार्यक्रम होता है। वर्तमान में WAG के अन्तर्गत तेरह सदस्यों देश में सम्मिलित हैं जैसे कि बहरीन, ईरान, इराक, जार्डन, कुवैत, लेबनान, ओमान, फिलिस्तीन, कतर, साऊदी अरब, सीरिया, संयुक्त अरब अमीरात और यमन। पश्चिम एशियाई खेलों का आयोजन पहली बार ईरान के तेहरान में किया गया था। खेलों की सफलता ने वेस्ट एशियन गेम्स फेडरेशन (WAGF) का निर्माण किया और हर चार वर्ष साल में खेलों की मेजबानी करने का इरादा बनाया। पश्चिम एशियाई खेल, ओलम्पिक कांउसिल ऑफ एशिया (OCA) के पाँच क्षेत्रीय खेलों में सबसे नया है। अन्य मध्य एशियाई खेल, पूर्व एशियाई खेल, दक्षिण एशियाई खेल और दक्षिण पूर्व एशियाई, खेल या एस ई ए खेल है।

कुंजी शब्द–वेस्ट एशियन गेन्स फेडरेशन, ओलम्पिक काउंसिल ऑफ एशिया, मध्य एशियाई खेल, पूर्वी एशियाई खेल, दक्षिण एशियाई खेल, दक्षिण पूर्वी एशियाई खेल, खोबर, ऐविस्टा

साऊदी अरेबिया–यहाँ पहली बार खेलों का केन्द्र खोला गया जिसका नाम खोबर है। खोबर में प्रशिक्षण कार्यक्रम शामिल किया गया शारीरिक क्षमता को बढ़ाने के उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए के अन्तर्गत कराटे योगा और बजन नियन्त्रण को इसमें शामिल करके बच्चों के लिए क्रियान्वित किया और ये साऊदी अरेबिया में पहली बार घोषित किया गया। व्यक्तिगत स्कूलों में इसको चलाया गया जबकि पब्लिक स्कूल में इसको प्रतिबन्धित किया गया। 2017 में साऊदी अरेबिया के शिक्षा मंत्रालय में शारीरिक शिक्षा को व्यक्तिगत स्कूलों में शामिल किया क्योंकि 2030 में साऊदी अरेबिया को स्वास्थ्य के दृष्टिकोण से 2018 में इसे वर्णक्रम में शामिल किया गया लेकिन महिलाओं को स्टेडियम में जाने के अनुमति नहीं है। Kind Fahd Stadium, Kind Abadullah Sports City Price Mohamed bin Stadium को साऊदी अरेबिया में आगे बढ़ाया गया था महिलाओं को खेलों में आगे बढ़ाने को कार्य किया। रीमा बिन्ट बन्दर 2019 में पहली बार खेलों में नियुक्त किया गया।

ईरान–ईरान में विभिन्न परम्परागत और आधुनिक खेल खेले जाते है। तेहरान उदाहरणार्थ है पहला शहर था जहां पश्चिम एशियाई खेलों की मेजबानी की 1974 में भी और अन्य खेलों में भी लगातार सहभागिता निभायी अन्तर्राष्ट्रीय खेलों में फ्री स्टाईल कुश्ती वहां परम्परागत खेल में अन्तर्गत आती है कुश्ती राष्ट्रीय खेल है। आज फुटबाल वहां सबसे ज्यादा लोकप्रिय है वहां की आर्थिक दशा अच्छी होने की वजह से वहां की खेलों का सरकार बजट में 80 मिलियन है। प्रत्येक खिलाड़ी की प्रति व्यक्ति आय 1 मिलियन है। खेल एक व्यायाम है और मूलभूत अधिकार है जो प्रत्येक दिन वहां के लोग इसका अनुसरण करते है।

ईरानी समाज में खेलों का विशेष स्तर है जो अपनी शारीरिक क्षमता शक्ति को बढ़ाते है। धार्मिक शिक्षा के अनुसार प्राचीन ईरानी लोग आध्यात्मिक अर्थ के लिए खेल को व्यर्थ क्रिया मानते थे वह आधुनिक समय में खेलों को हथियार के रूप में इस्तेमाल करते थे। धार्मिक

DR VINETA

International Journal of Applied Research

Peer Reviewed Journal, Refereed Journal, Indexed Journal
ISSN Print: 2394-7500, ISSN Online: 2394-5869, CODEN: IJARPF, Impact Factor: RJIF 5.2

Publication Certificate

This certificate confirms that "**Dr. Vineta**" has published manuscript titled "**Effect of personality type and gender on the level of anxiety in B.P. patients**".

Details of Published Article as follow:

Volume	:	**6**
Issue	:	**4**
Month	:	**Apr**
Year	:	**2020**
Page Number	:	**08-09**

Certificate No.: **6-3-87**
Date: **01-05-2020**

Yours Sincerely,

Akhil Gupta

Akhil Gupta
Publisher
International Journal of Applied Research
www.allresearchjournal.com
Tel: +91-9711224068

AKINIK Director Publications

Vineta

International Journal of Applied Research

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2020; 6(4): 08-09
www.allresearchjournal.com
Received: 04-02-2020
Accepted: 06-03-2020

Dr. Vineta
Assistant Professor, Department of Psychology, Ismail National Mahila (PG) College, Meerut, Uttar Pradesh, India

Dr. Anil Kumar
Assistant Professor, Institute of Business Studies, Ch. Charan Singh University, Meerut, Uttar Pradesh, India

Correspondence Author:
Dr. Vineta
Assistant Professor, Department of Psychology, Ismail National Mahila (PG) College, Meerut, Uttar Pradesh, India

Effect of personality type and gender on the level of anxiety in B.P. patients

Dr. Vineta and Dr. Anil Kumar

Abstract
This study reveals the effect of personality type i.e. introvert and extrovert and gender on the level of anxiety in B.P. Patients. For this purpose 180 subjects were taken. The data have been collected from 180 patients by using anxiety scale. F-Test was also applied to get better results.

Keywords: Personality type i.e. introvert and extrovert, gender and anxiety

Introduction

Anxiety is an unpleasant emotional state in which a present and continuing desire or drive seems likely to miss its goals; a fusion of fear with the anticipation of future evil, marked and continuous fear of loss of intensity; a feeling of threat, especially of a fearsome threat without the person being able to say what he thinks threatens.

Many psychological reactions are associated with anxiety such as rapid heart rate, rapid or irregular breathing and dizziness. A person is likely to report felling of apprehension, vague expectations of impending disaster of more specific fears of losing control going to pieces or dying. He is likely experience insommania, restlessness, recurring, nightmares or anxiety dreams, difficulty in concentration, physical fatigue and general inefficiency to work or study.

Methodology and Design

Problems

1. To study the effect of different personality types I. i.e. introvert and extrovert on anxiety
2. To study the effect of gender of B.P. Patients on anxiety

Hypothesis

1. There will be no significant difference in anxiety of introvert and extrovert subjects
2. There will be no significant difference in anxiety of males and females

Description of Variables

Independent Variable

1. Personality type i.e: Introvert and extrovert
2. Gender: Male and Female

Dependent Variable

Anxiety

Research Design

In the present study, we have studied the effect of two independent variables
On one dependent variable i.e. Anxiety

1. The first independent variable, personality type (A) was varied at two levels i.e. Introvert (A1) and extrovert (A2)
2. Second independent variable, Gender (C) was varied at two levels i.e. Male (C1) and Female (C2)

Vineta

Sample

In the present study, 180 subjects are used as sample of the research. Out of these 180, 90 subjects are of Introvert personality type and 90 subjects are of extrovert personality type. Among these 180 subjects90 subjects were males and 90 subjects were females.

Tools

Anxiety scale

Table 1.1: Analysis of variance for anxiety score

Source of variation	Sum of square	Degree of freedom	Mean Square	F Value
Personality type (A)	2442.04	1	2442.04	40.95**
Gender (C)	4410.45	1	4410.45	73.95**

** Significant at 0.01 level of confidence
* Significant at 0.05level of confidence

Effect of personality type

Personality type was varied at two levels i.e. Introvert and extrovert. Analysis of variance reveals a significant effect of personality type on the level of anxiety. i.e. 40.96, $P < .01$. It means F-ratio for independent variable is significant at .01 levels. This significant F value reveals that the personality type is an influencing factor for level of anxiety. It is, therefore asserted that the reason of level of anxiety in B.P. Patients is not by chance but due to personality type.

In order to know the two means stand apart, as to which category cause the maximum level of anxiety and which has the minimum scores of level of anxiety. The obtained scores are given in table-1.2.

Table 1.2: Mean Anxiety score for two Personality type

S.N.	Personality type	N	Total	Mean
1.	Introvert (A1)	90	3356	37.29
2.	Extrovert (A2)	90	2693	29.92

The table 1.2 indicates that introvert personality subjects have maximum levels of anxiety than extrovert subjects. These characteristics of data become quite clear, when the means are represented graphically in the form of bar diagram. Personality types are shown along with the x-axis and mean score are shown along the y-axis in figure.

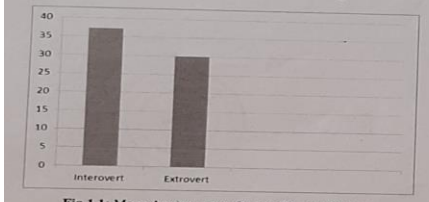

Fig 1.1: Mean Anxiety score for two Personality type

Effect of gender

The main effect of gender as an independent variable represents a comparison of the level of anxiety between C1 &C2. Summary table of analysis of variance reveals significant effect of gender on the level of anxiety, F-73.95<.01

In order to know, which group has minimum level of anxiety and which has the maximum score, the obtained score are given in table 1.3.

Table 1.3: Mean Score of Anxiety for factor Gender (C)

S.N.	Gender (C)	N	Total	Mean
1.	Male (C1)	90	2579	28.66
2.	Female (C2)	90	3470	38.59

The mean value of female subjects is higher than the mean value of male subjects. The mean score may be highlighted by the graphical representation in the form of bar diagram. Gender is shown along the x-axis and means scores are along the y-axis in figure1.2.

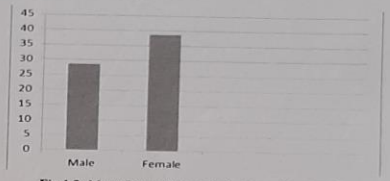

Fig 1.2: Mean Score of Anxiety for factor Gender (C)

Conclusion

1. The effect of personality type of B.P. Patient on the level of anxiety is significant.
2. The effect of gender of B.P. Patient on the level of anxiety is significant.

References

1. Anderson, Flaina Leslie Leigh A. Anxiety, employment and stress employment arrangement and gender differences sex role. 1991; 24(3-4):223-237.
2. Ansari MA, Krishna KP. Some personal variants of anxiety. Indian Journal of Psychology. 1974; 48:81-85.
3. Devi G. A study of anxiety in men and women college students. Journal of Psychological. Studies. 1969; 14:35-38.
4. Chatterjee S, Mukherjee M, Chakarvaraty SN, Hassan MK. Effect of sex, urbanization and caste on anxiety. Journal of Psychological Researches Studies. 1976; 20:55-58. 14, 35-38.
5. Trivedi JK, Gupta PK. An overview of Indian research in anxiety disorders, Indian Journal of Psychiatry. 2010; 52:210-218.
6. Evagelia Kotrotsiou. Anxiety and depression in teenagers and young adults with asthma, Health Science Journal. 2011, 5.
7. Jessica Sobnosky L. Overview and Management of Anxiety Disorders, Mental Health. 2014; 39(11):56-62.

Vineta

DR VINETA

International Journal of Academic Research and Development
ISSN: 2455-4197; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 22-04-2020; Accepted: 02-05-2020; Published: 09-05-2020
www.academicjournal.in
Volume 5; Issue 3; 2020; Page No. 06-07

Effect of personality type and age on the level of anxiety in B.P. patients

Vineta[1], Anil Kumar[2]

[1] Assistant Professor, Department of Psychology, Ismail National Mahila (PG) College, Meerut, Uttar Pradesh, India
[2] Assistant Professor, Institute of Business Studies, Ch. Charan Singh University, Meerut, Uttar Pradesh, India

Abstract
This study reveals the effect of personality type i.e. introvert and extrovert and age on the level of anxiety in B.P. Patients. For this purpose, 180 subjects were taken. The data have been collected from 180 patients by using anxiety scale and introversion and extroversion scale. F- Test was also applied to get better results.

Keywords: personality type i.e. introvert and extrovert, age and anxiety

1. Introduction
Anxiety is regarded as basic or fundamental emotion. It is not probably the most basic of all emotions. Not only it is experienced by all humans but responses have been found in all species of animals right down to the study. Anxiety is general term for several disorders that cause nervousness, fear, apprehension and worrying. These disorders affect how we feel and behave, they can manifest real physical symptoms. Mild anxiety is vague & unsettling, while server anxiety can be extremely debilitating, having a serious impact on daily life.

Methodology and Design
Problems
1. To study the effect of different personality types I. i.e. introvert and extrovert on anxiety
2. To study the effect of different age group of B.P. Patients on anxiety

Hypothesis
1. There will be no significant difference in anxiety of introvert and extrovert subjects
2. There will be no significant difference in anxiety of different age groups (30-45, 45-60 and 60-75 years old) B.P. Patients

Description of Variables
Independent Variable
1. Personality type i.e. Introvert and extrovert
2. Age i.e. 30-45, 45-60 and 60-75 years old

Dependent Variable
Anxiety

Research Design
In the present study, we have studied the effect of two independent variables
On one dependent variable i.e. Anxiety
1. The first independent variable, personality type (A) was varied at two levels i.e. Introvert (A1) and extrovert (A2)
2. Second independent variable, Age was varied at three levels i.e. 30-45, 45-60 and 60-75 years old

Sample
In the present study, 180 subjects are used as sample of the research. Out of these 180, 90 subjects are of Introvert personality type and 90 subjects are of extrovert personality type. Among these 180 subjects60 subjects were of 30-45 years, 60 subjects were 45-60 years and 60 subjects were 60-75 years old.

Tools
1. Introversion /Extroversion scale
2. Anxiety scale

Table 1: Analysis of variance for anxiety score

Source of variation	Sum of square	Degree of freedom	Mean Square	F Value
Personality type (A)	2442.04	1	2442.04	40.95**
Age (B)	1214.08	2	607.04	10.18**

** Significant at 0.01 level of confidence
* Significant at 0.05level of confidence

Effect of personality type
Personality type was varied at two levels i.e. Introvert and extrovert. Analysis of variance reveals a significant effect of personality type on the level of anxiety. i.e. 40.95, P< .01. It means F-ratio for independent variable is significant at .01 levels. This significant F value reveals that the personality type is an influencing factor for level of anxiety. It is, therefore asserted that the reason of level of anxiety in B.P. Patients is not by chance but due to personality type.
In order to know the two means, stand apart, as to which category cause the maximum level of anxiety and which has the minimum scores of levels of anxiety. The obtained scores are given in table-1.2

Table 2: Mean Anxiety score for two Personality type

S.N.	Personality type	N	Total	Mean
1	Introvert (A1)	90	3356	37.29
2	Extrovert (A2)	90	2693	29.92

The table 1.2 indicates that introvert personality subjects have maximum levels of anxiety than extrovert subjects. These characteristics of data become quite clear, when the

6.2

means are represented graphically in the form of bar diagram. Personality types are shown along with the x-axis and mean score are shown along the y-axis in figure

Fig 1: Mean Anxiety score for two Personality type

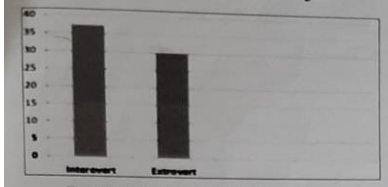

Effect of Age

Age was varied at three levels i.e. 30-45(B1), 45-60 (B2) and 60-75 (B3) years old age group B.P. Patients. Analysis of variance reveals significant effect of age on level of anxiety i.e. 10.18<.01 level. In order to know, which group has minimum degree of anxiety and which has the minimum score. The obtained scores are given in table-1.3

Table 3: Mean Anxiety score for Age

S.N.	Age (B)	N	Total	Mean
1	30-45 (B1)	60	2123	35.38
2.	45-60 (B2)	60	2130	35.50
3	60-75 (B3)	60	1796	29.93

The table 1.3 indicated that 30-45 years old age group B.P. Patients has maximum level of anxiety while 45-60 years age group scored the intermediate and 60-75 years old age group scored the lowest level in anxiety. The mean scores may further be highlighted by graphical representation. Age on x-axis and mean scores on y-axis as shown in figure-1.2

Fig 2: Mean Anxiety score for Age

Table 4: To test the significance of mean difference, Newman Keuls Test has been used. The summary of results is given in

Ordered mean	29.93 (B3)	35.38 (B1)	35.50 (B2)
29.93 (B3)	-	5.45	5.57
35.38 (B1)		-	12

** Denotes significant at 0.01 level of confidence.

The inspection of table indicates that among all the three comparison B2 &B3, B1&B2 and B1& B, all the comparison have failed to touch any significant level.

Conclusion

1. The effect of personality type of B.P. Patient on the level of anxiety is significant.
2. The effect of age of B.P. Patient on the level of anxiety is significant.

References

1. Anderson Flaina A Leslie. Leigh Anxiety, employment and stress employment arrangement and gender differences sex role. 1991; 24(3-4):223-237.
2. Ansari MA, Krishna KP. Some personal variants of anxiety. Indian Journal of Psychology. 1974; 48:81-85.
3. Ahmed Safia, Kapoor Vineeta. A study on white collar employees of Britania Industries. Journal of Personality & Clinical studies. 1995; 11(1-2):33-35.
4. Alticher Lauren, Motta Robert. Effect of aerobic and non-aerobic exercise on anxiety, absenteeism and job satisfaction. Journal of clinical Psychology. 1985; 50(6):829-840.
5. Singh Sinha, Shah. Intelligence, anxiety, Extroversion and achievement motivation as a function of sex difference in Santhals. Indian Journal of Psychology. 1983; 51:161-167.
6. ADDA. the economic burden of anxiety disorder, the journal of Clinical Psychiatry. 2010; 60(7):52-59.
7. Mellandy James, Zindars An. Trait anxiety and final degree performance at the University of Oxford. Higher education, The International journal of higher education and education planning, 2011.
8. Sinha NCP. A study of relationship between manifest anxiety and scholastic achievement. Journal of Indian academy of applied Psychology. 1975; 9(2):65-67.

Vineta

Annexure (6)

International Journal of Academic Research and Development

International Journal of Academic Research and Developme

Online and Print Journal, Indexed Journal, Refereed Journal, Peer Reviewed Journal

ISSN: 2455-4197, Impact Factor: RJIF 5.22

Publication Certificate

This certificate confirms that "**Vineta**" has published article titled "**Effect of personality type age on the level of anxiety in B.P. patients**".

Details of Published Article as follow:

DR SHUBRA TRIPATHI

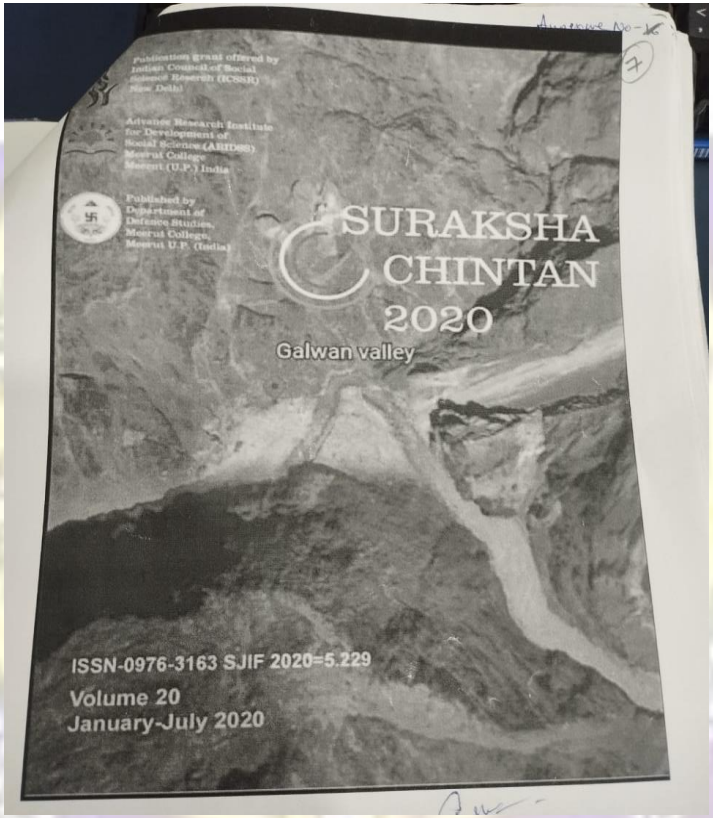

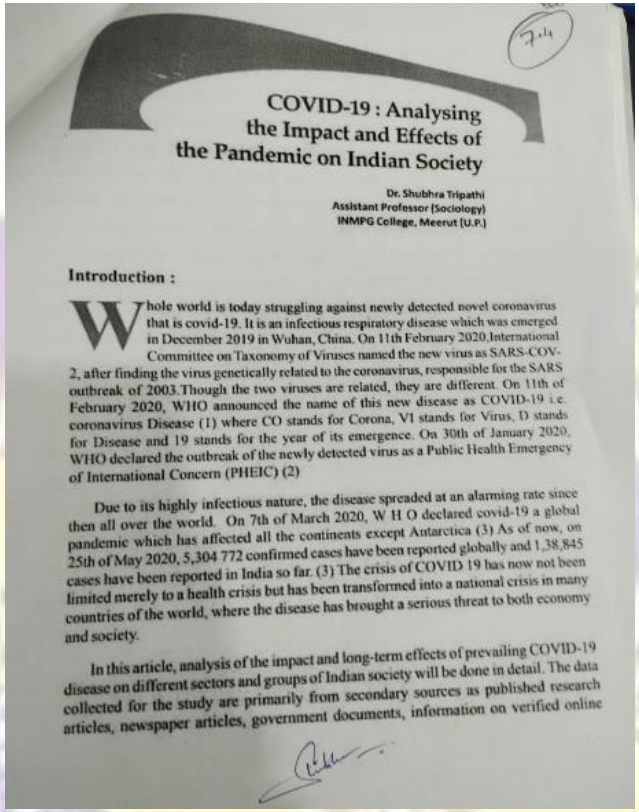

COVID-19 : Analysing the Impact and Effects of the Pandemic on Indian Society

Dr. Shubhra Tripathi
Assistant Professor (Sociology)
INMPG College, Meerut (U.P.)

Introduction :

Whole world is today struggling against newly detected novel coronavirus that is covid-19. It is an infectious respiratory disease which was emerged in December 2019 in Wuhan, China. On 11th February 2020,International Committee on Taxonomy of Viruses named the new virus as SARS-COV-2, after finding the virus genetically related to the coronavirus, responsible for the SARS outbreak of 2003.Though the two viruses are related, they are different. On 11th of February 2020, WHO announced the name of this new disease as COVID-19 i.e. coronavirus Disease (1) where CO stands for Corona, VI stands for Virus, D stands for Disease and 19 stands for the year of its emergence. On 30th of January 2020, WHO declared the outbreak of the newly detected virus as a Public Health Emergency of International Concern (PHEIC) (2)

Due to its highly infectious nature, the disease spreaded at an alarming rate since then all over the world. On 7th of March 2020, W H O declared covid-19 a global pandemic which has affected all the continents except Antarctica (3) As of now, on 25th of May 2020, 5,304 772 confirmed cases have been reported globally and 1,38,845 cases have been reported in India so far. (3) The crisis of COVID 19 has now not been limited merely to a health crisis but has been transformed into a national crisis in many countries of the world, where the disease has brought a serious threat to both economy and society.

In this article, analysis of the impact and long-term effects of prevailing COVID-19 disease on different sectors and groups of Indian society will be done in detail. The data collected for the study are primarily from secondary sources as published research articles, newspaper articles, government documents, information on verified online

Subject | Page No.

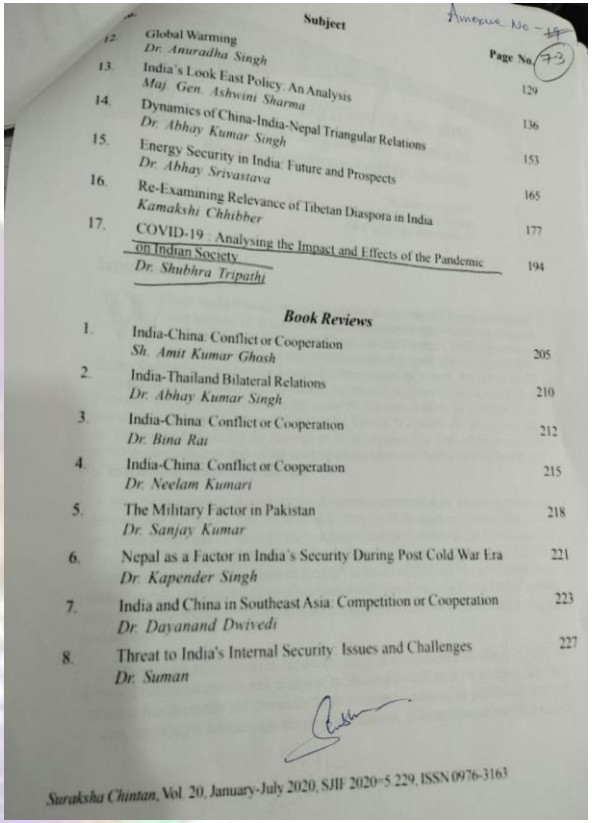

12. Global Warming
Dr. Anuradha Singh
13. India's Look East Policy: An Analysis — 129
Maj. Gen. Ashwini Sharma
14. Dynamics of China-India-Nepal Triangular Relations — 136
Dr. Abhay Kumar Singh
15. Energy Security in India: Future and Prospects — 153
Dr. Abhay Srivastava
16. Re-Examining Relevance of Tibetan Diaspora in India — 165
Kamakshi Chhibber
17. COVID-19 : Analysing the Impact and Effects of the Pandemic on Indian Society — 177
Dr. Shubhra Tripathi — 194

Book Reviews

1. India-China: Conflict or Cooperation — 205
Sh. Amit Kumar Ghosh
2. India-Thailand Bilateral Relations — 210
Dr. Abhay Kumar Singh
3. India-China: Conflict or Cooperation — 212
Dr. Bina Rai
4. India-China: Conflict or Cooperation — 215
Dr. Neelam Kumari
5. The Military Factor in Pakistan — 218
Dr. Sanjay Kumar
6. Nepal as a Factor in India's Security During Post Cold War Era — 221
Dr. Kapender Singh
7. India and China in Southeast Asia: Competition or Cooperation — 223
Dr. Dayanand Dwivedi
8. Threat to India's Internal Security: Issues and Challenges — 227
Dr. Suman

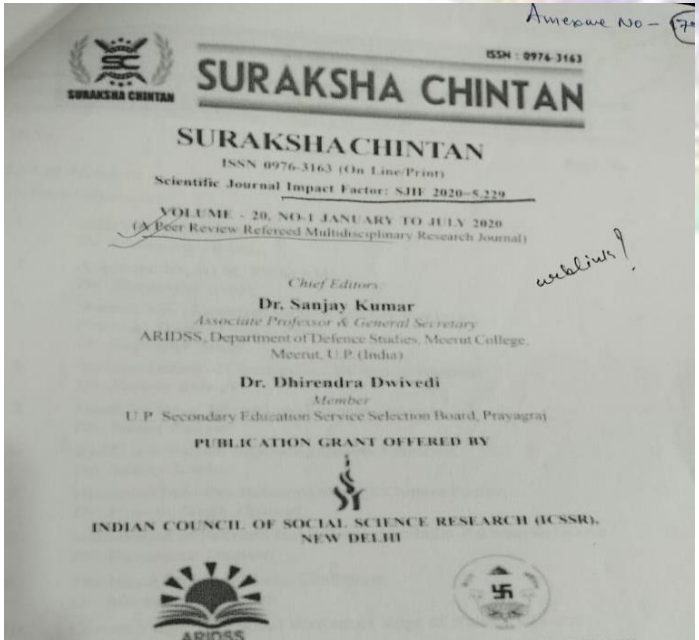

ISSN : 0976-3163

SURAKSHA CHINTAN

SURAKSHACHINTAN
ISSN 0976-3163 (On Line/Print)
Scientific Journal Impact Factor: SJIF 2020=5.229
VOLUME - 20, NO-1 JANUARY TO JULY 2020
(A Peer Review Refereed Multidisciplinary Research Journal)

Chief Editors
Dr. Sanjay Kumar
Associate Professor & General Secretary
ARIDSS, Department of Defence Studies, Meerut College, Meerut, U.P. (India)
Dr. Dhirendra Dwivedi
Member
U.P. Secondary Education Service Selection Board, Prayagraj

PUBLICATION GRANT OFFERED BY
INDIAN COUNCIL OF SOCIAL SCIENCE RESEARCH (ICSSR), NEW DELHI

ARIDSS

SMT AANCHAL SINGH

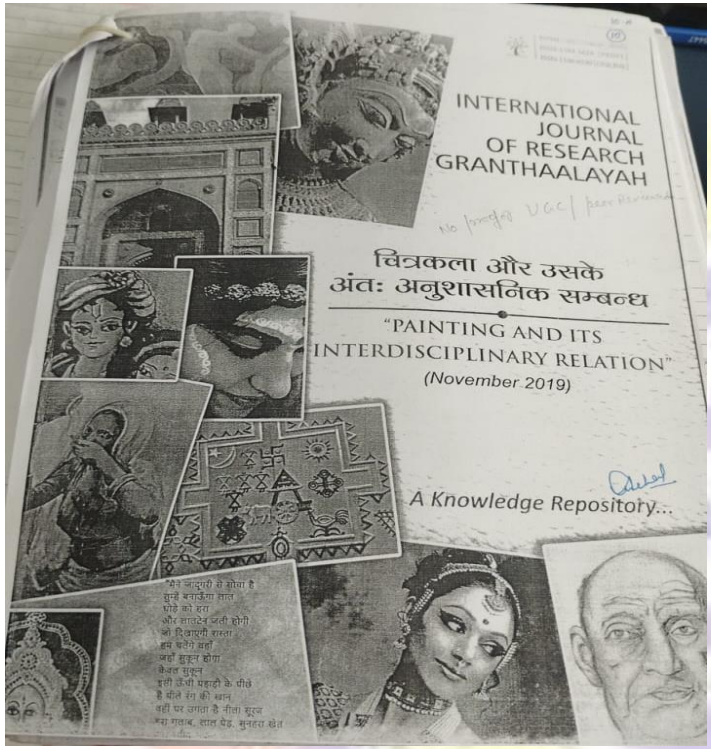

Table of Content

S. No.	Title	Author Name	Page No.
1.	मांडना में विभिन्न चौक परम्परा	डॉ. कुमकुम भारद्वाज	1-3
2.	चित्रकला में साहित्य/साहित्य में चित्रकला	डॉ. शोभना जोशी	3-6
3.	आदिवासी अंग आरेखन कला - गुदना	डॉ. सुषमा जैन	7-8
4.	चित्रकला की एक तकनीक - मेरी कोलाज कला	डॉ. यतीन्द्र महोबे	9-10
5.	भित्ति चित्रांकन संज्ञा (मालवा-निमाड़ के विशेष संदर्भ में)	डॉ. ज्योति ढोले	10-12
6.	समाज एवं कला	डॉ. निशा जैन	
7.	मध्यप्रदेश की लोक चित्रकला- एक परिचय	देवेन्द्रसिंह ठाकुर	12-13
8.	बारेला जनजाति की लोक कलाएँ	डॉ. आनन्दसिंह पटेल	14-17
9.	मध्यकालीन भारतीय लघु चित्रण शैलियों के चित्रों में कलात्मक हाशियों का अंकन एवं महत्व: एक अध्ययन	डॉ. मंजुला निगवाल	17-21 21-23
10.	समकालीन चित्रकला में किशनचन्द आर्यन जी का योगदान	डॉ. अनन्ता शाँडिल्य	23-26
11.	भारतवर्ष में विविध कालीन चित्रकला का स्वरूप	डॉ. साधना चौहान, मोनालिसा राजौरा	27-28
12.	राजपूत-चित्रकला (राजस्थान) मेवाड शैली	डॉ. उषा महोबिया	28-30
13.	प्राचीन भारतीय ग्रन्थ में चित्रकला उल्लेख	निशा माहौर	30-32
14.	कला और समाज का अन्तर्सम्बन्ध	आशुतोष कुमार सोनिया	32-34
15.	मधुबनी लोक चित्रकला पर समकालीन प्रभाव	चरनजीत सिंह	34-37
16.	कला और मनोविज्ञान का सम्बन्ध	डॉ. पूनम	37-40
17.	भारतीय कला में लोककला का महत्व	श्रीमती अँचल सिंह	40-43
18.	काव्यचित्र एवं चित्रकाव्य	अनीता जोशी	44-47
19.	व्यवसायिकता की ओर उन्मुख छत्तीसगढ़ की आदिवासी एवं लोक कला संस्कृति	डॉ. नीलिमा गुप्ता	47-51
20.	वनस्पतियों के मापन और आकारों में विभिन्नताएं एवं रंगों के संयोजन का तुलनात्मक अध्ययन	डॉ. शोभा शर्मा	51-54
21.	जैन संस्कृति/धर्म में चित्रकला-मण्डल विधान के विशेष संदर्भ में	डॉ. निशा मोदी	54-57
22.	संगीत का चित्रकला से संबंध	डॉ. पूर्वी निमगांवकर	57-58
23.	काँच पर चित्रकला की विविध तकनीक	डॉ. कुमकुम भारद्वाज, प्रवीण कुमार माठे	59-60
24.	मिर्जापुर के पुरा शैल चित्र स्थल	आकांक्षा सिंह, प्रो. के. रतनम	61-64
25.	लौकिक संस्कृत साहित्य में सौन्दर्य शास्त्रीय चिन्तन का स्वरूप	डॉ. श्रुति कक्कर	64-67
26.	चित्रकार विष्णु चिंचालकर का कला संसार	डॉ. रश्मि जोशी,	67-69

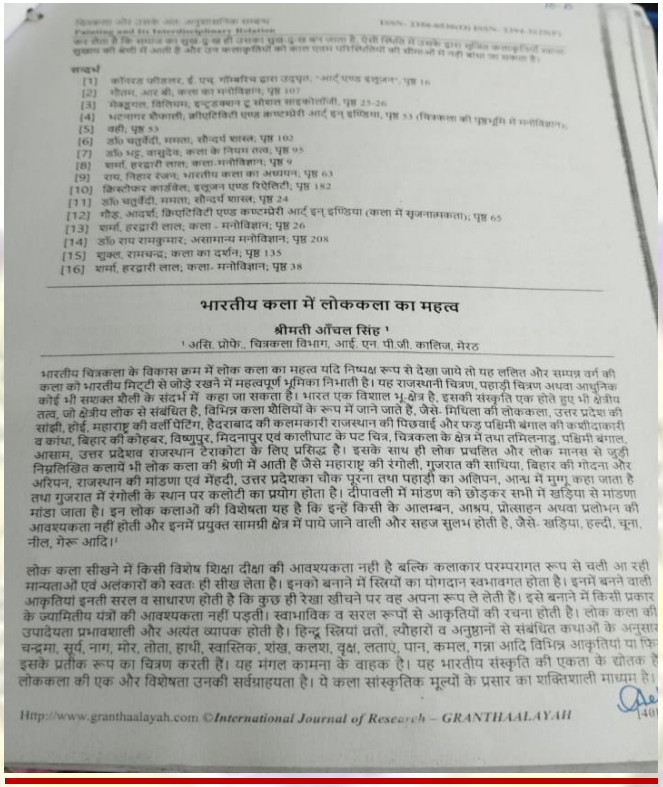

ISSN- 2350-0530(O) ISSN- 2394-3629(P)

कर लेता है कि समाज का सुख-दुःख ही उसका सुख-दुःख बन जाता है, ऐसी स्थिति में उसके द्वारा सृजित कलाकृतियाँ स्वान्तः सुखाय की श्रेणी में आती है और उन कलाकृतियों को काल एवम परिस्थितियों की सीमाओं में नहीं बांधा जा सकता है।

सन्दर्भ

[1] कॉनरड फीडलर, ई. एच. गॉम्ब्रिच द्वारा उद्धृत, "आर्ट एण्ड इल्यूजन", पृष्ठ 16
[2] गौतम, आर बी; कला का मनोविज्ञान; पृष्ठ 107
[3] मेक्डूगल, विलियम; इन्ट्रडक्शन टू सोशल साइकोलॉजी, पृष्ठ 23-26
[4] भटनागर शेफाली; क्रीएटिविटी एण्ड कण्टम्पेरी आर्ट इन् इण्डिया, पृष्ठ 53 (चित्रकला की पृष्ठभूमि में मनोविज्ञान)
[5] वही; पृष्ठ 53
[6] डॉ० चतुर्वेदी, ममता; सौन्दर्य शास्त्र; पृष्ठ 102
[7] डॉ० भट्ट, वासुदेव; कला के नियम तत्व; पृष्ठ 95
[8] शर्मा, हरद्वारी लाल; कला-मनोविज्ञान; पृष्ठ 9
[9] राय, निहार रंजन; भारतीय कला का अध्ययन; पृष्ठ 63
[10] क्रिस्टोफर कार्डवेल; इल्यूजन एण्ड रिऐलिटी; पृष्ठ 182
[11] डॉ० चतुर्वेदी, ममता; सौन्दर्य शास्त्र; पृष्ठ 24
[12] गौड़, आदर्श; क्रिएटिविटी एण्ड कण्टम्प्रेरी आर्ट इन् इण्डिया (कला में सृजनात्मकता); पृष्ठ 65
[13] शर्मा, हरद्वारी लाल; कला - मनोविज्ञान; पृष्ठ 26
[14] डॉ० राय रामकुमार; असामान्य मनोविज्ञान; पृष्ठ 208
[15] शुक्ल, रामचन्द्र; कला का दर्शन; पृष्ठ 135
[16] शर्मा, हरद्वारी लाल; कला- मनोविज्ञान; पृष्ठ 38

भारतीय कला में लोककला का महत्व

श्रीमती आँचल सिंह [1]
[1] असि. प्रोफे., चित्रकला विभाग, आई. एन. पी.जी. कालिज, मेरठ

भारतीय चित्रकला के विकास क्रम में लोक कला का महत्व यदि निष्पक्ष रूप से देखा जाये तो यह ललित और सम्पन्न वर्ग की कला को भारतीय मिट्टी से जोड़े रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यह राजस्थानी चित्रण, पहाड़ी चित्रण अथवा आधुनिक कोई भी सशक्त शैली के संदर्भ में कहा जा सकता है। भारत एक विशाल भू-क्षेत्र है, इसकी संस्कृति एक होते हुए भी क्षेत्रीय तत्व, जो क्षेत्रीय लोक से संबंधित है, विभिन्न कला शैलियों के रूप में जाने जाते हैं, जैसे- मिथिला की लोककला, उत्तर प्रदेश की सांझी, होई, महाराष्ट्र की वर्ली पेंटिंग, हैदराबाद की कलमकारी राजस्थान की पिछवाई और फड़ पश्चिमी बंगाल की कशीदाकारी व कांथा, बिहार की कोहबर, विष्णुपुर, मिदनापुर एवं कालीघाट के पट चित्र, चित्रकला के क्षेत्र में तथा तमिलनाडु, पश्चिमी बंगाल, आसाम, उत्तर प्रदेशव राजस्थान टेराकोटा के लिए प्रसिद्ध है। इसके साथ ही लोक प्रचलित और लोक मानस से जुड़ी निम्नलिखित कलायें भी लोक कला की श्रेणी में आती हैं जैसे महाराष्ट्र की रंगोली, गुजरात की साथिया, बिहार की गोदना और अरिपन, राजस्थान की मांडणा एवं मेंहदी, उत्तर प्रदेशका चौक पूरना तथा पहाड़ी का अलिपन, आन्ध्र में मुग्गू कहा जाता है तथा गुजरात में रंगोली के स्थान पर कलोटी का प्रयोग होता है। दीपावली में मांडण को छोड़कर सभी में खड़िया से मांडणा मांडा जाता है। इन लोक कलाओं की विशेषता यह है कि इन्हें किसी के आलम्बन, आश्रय, प्रोत्साहन अथवा प्रलोभन की आवश्यकता नहीं होती और इनमें प्रयुक्त सामग्री क्षेत्र में पाये जाने वाली और सहज सुलभ होती है, जैसे- खड़िया, हल्दी, चूना, नील, गेरू आदि।[1]

लोक कला सीखने में किसी विशेष शिक्षा दीक्षा की आवश्यकता नही है बल्कि कलाकार परम्परागत रूप से चली आ रही मान्यताओं एवं अलंकारों को स्वतः ही सीख लेता है। इनको बनाने में स्त्रियों का योगदान स्वभावगत होता है। इनमें बनने वाली आकृतियां इनती सरल व साधारण होती है कि कुछ ही रेखा खीचने पर वह अपना रूप ले लेती हैं। इसे बनाने में किसी प्रकार के ज्यामितीय यंत्रों की आवश्यकता नहीं पड़ती। स्वाभाविक व सरल रूपों से आकृतियों की रचना होती है। लोक कला की उपादेयता प्रभावशाली और अत्यंत व्यापक होती है। हिन्दू स्त्रियां व्रतों, त्यौहारों व अनुष्ठानों से संबंधित कथाओं के अनुसार चन्द्रमा, सूर्य, नाग, मोर, तोता, हाथी, स्वास्तिक, शंख, कलश, वृक्ष, लताएं, पान, कमल, गन्ना आदि विभिन्न आकृतियां या फि इसके प्रतीक रूप का चित्रण करती हैं। यह मंगल कामना के वाहक है। यह भारतीय संस्कृति की एकता के द्योतक है लोककला की एक और विशेषता उनकी सर्वग्राहयता है। ये कला सांस्कृतिक मूल्यों के प्रसार का शक्तिशाली माध्यम है।

 ISSN- 2350-0530(O) ISSN- 2394-3629(P)

10-D

महत्वपूर्ण सिद्ध करने में सफल हुए है।[9] इसके फलस्वरूप अनेक युवा कलाकार परम्परागत भारतीय लोक कला की ओर मुड़े।

यद्यपि मकबूल फिदा हुसैन की कला उत्तरप्रभाववादी शैली से प्रभावित है, तथापि उनके द्वारा निर्मित अनेक चित्रों में लोक कला की सहजता, भावुकता तथा सादगी दृष्टिगोचर होती है। लोक शैली से प्रभावित अब्दुल रहीम अप्पाभाई आलमेलकर की अलंकारिक योजनायें ग्राम शिल्पियों की भांति प्रत्येक स्थिति को अलंकारिक संयोजन में परिवर्तित करने में दक्ष है। लयात्मक लकीरों के द्वारा इन्होंने आदिवासी युगल के आनंदमय क्षणों को बांध लिया है। आदिवासी जीवन में प्रेम और आग्रह का प्रतीक कंघी के द्वारा उनके मनोभावों का सुन्दर चित्रण करने में पूर्ण समर्थ रहे है।

वाई० के० शुक्ला, ज्योति भट्ट, आर० बी० भास्करन, जी० एस० वासुदेव, रामेश्वर सिंह और लक्ष्मण यादव की कृतियों में लोक तथा जनजातीय स्रोतों से प्राप्त प्रतीकों, चिन्हों तथा अभिप्रायों का खुलकर प्रयोग हुआ है। इन कलाकारों की कृतियां भारतीय आस्वाद के साथ-साथ समाकालीन भी हैं। इसी तरह का काम आर० सारंगन का भी है। जो प्रायः यंत्र परम्परा से प्रेरित होकर चित्रांकन करते हैं। उनके मिश्रित माध्यम की खास बात यह है कि उनकी कृतियों में वलवाजनि इनमेल तथा दक्षिण भारतीय 'कोलम डिजाइन' कुछ इस तरह घुलमिल गए लगते हैं कि विशिष्ट अलंकारिक पेंटिंग का रूप ले लेते हैं।[9]

बद्रीनारायण ने अपनी अन्योक्तिपरक पेंटिंग में, जो मोटी रेखाओं के प्रयोग के कारण भी विशिष्ट है, लोक चित्रभाषा में ऐसी फंतासियों को रचा जो पौराणिक तथा लोककथाओं पर आधारित हैं। इन्होंने अपने बारीक रैखिक कौशल को उसकी अंतिम सीमा तक पहुंचा दिया। इनके आकृतिमूलक रूपाकार कभी-कभी तमिलनाडु के लोक टेराकोटा का आभास देने लगते है, जो मानो चाक पर बनाए गए हो। जे० स्वामीनाथ की पेंटिंग्स, विभिन्न लयों में, रूपाकारिक अनुशासन व स्वेच्छाचारिता के संयोग से निष्पादित हुई है। उन्होंने अपने अवचेतन का भरपूर उपयोग किया है और अपने काम में ऐसे जीवन्त तत्व को लाने की कोशिश की है, जो गणितीय या सुव्यवस्थित वक्तव्य की मदद से नहीं लाया जा सकता जैसा कि उनकी कुछ आरंभिक कलाकृतियों में दिखाई देता है। यही कारण है कि वह लोक अथवा जनजातीय कला रूपों की तरफ आकर्षित हुए क्योंकि ये स्वतः स्फूर्त तो है ही, साथ ही इन्हें एक स्वायत्त विशिष्टता की सांस लेते हुए भी महसूस किया जा सकता है।[9]

संजू दास की कला, लोक कला तथा आधुनिकता का समन्वय है। पारम्परिक मिथिल चित्रों में मिक्स मीडिया का प्रयोग कर रंगों के चटकीलेपन को प्रधानता देते हुये हरे, पीले, नारंगी और लाल रंगों को प्रयोग इन्हें अधिक पसन्द है। दर्शकों को ग्रामीण परिवेश से जोड़ने की ललक के कारण वे अपने स्थानीय परिवेश से जुड़ी हुई है। नरायण श्रीधर बैन्द्रे की कला में मालवा के लोक जीवन के रंगों का अपनी संगति के अनुसार उपयोग किया गया है। रूपाकार सपाट रंगों से तंद्रामय तादात्मय बैठाते है। उनके चित्रों में लोक रूप, लोक रंग की सहजता और उसकी शक्ति प्रदर्शित होती हैं।

समकालीन भारतीय कलाकारों की लोक कला तथा संस्कृति में दिलचस्पी बढ़ती जा रही है। लोक कलाओं के व्यावहारिक और धार्मिक दोनों प्रयोजन होते हैं। लोककलाओं का विकास समाजिक तथा भौगोलिक परिवेश से निर्धारित है। इनमें प्रयुक्त बिंब, अभिप्राय तथा प्रतीक लोगों के उन मूल्यों की अभिव्यक्ति है, जो किसी खास ऐतिहासिक युग में लोगों को प्रिय रहे होते हैं। ये अतीत की विशेषताएं है, और आज भी जारी हैं। अतः इनको मात्र प्रेरक मानना ठीक नहीं बल्कि इन्हें किसी विशिष्ट संस्कृति के प्रमाण चिन्ह मानना चाहिए। कला के ये रूपाकार एक ऐसी उर्जा से युक्त थे जो खास लोगों की आंतरिक तथा बाहरी समष्टि के नियोजक थे।[10]

छत्तीसगढ़ तथा मध्यप्रदेश के कलाकारों द्वारा उकेरे गये विभिन्न चित्र यहां की जनजातीय सांस्कृतिक विरासत तथा सजृनशीलता के प्रतीक है। यहां की जनजातीयों द्वारा निर्मित लोक चित्रों में उनके परम्परागत गुदना अभिप्रायों का समावेश और रजवार जाति में प्रयुक्त किये जाने वाले अभिप्राय विशेष उल्लेखनीय है। आज भी अपनी अनुष्ठान परम्परा और समाकलीनता को अनेक कलाकार अपने लोककला रूपों में पुनसृजित कर रहे हैं। जिनमें एक कलाकार खेम वैष्णव है। जिन्होंने बस्तर की पारम्परिक चित्रकला को राष्ट्रीय स्तर तक उजागर किया है। आधुनिक कला को नया कलेवर व नया रूप प्रदान कर इन्होंने 'लक्ष्मी जगार' के मिथक पात्रों का सजीवन चित्रण किया है। साथ ही अनेक चित्रों में बस्तर के लोक जीवन में प्रचलित उपयोगी वस्तुओं तूंबा, मुरली आदि का अंकन अत्याधिक आकर्षक तरीके से किया है।[11]

इस प्रकार भारत के अनेक आधुनिक कलाकार लोक कला से प्रेरणा पाकर उनका प्रयोग अपनी कला में कर रहे हैं। यह प्रेरणा अधिकांश कलाकार अपने क्षेत्र में प्रचलित लोक कला से ही ग्रहण कर रहे हैं। आज लोक कला से प्राप्त अभिप्रायों को सांस्कृतिक कला रूपों में समाविष्ट करने का चलन सा हो गया है। लोक संस्कृति से होने वाले इस सरोकार का कारण उस अतीत का मोह हो सकता है जो अब अस्तित्व में नहीं है।[12]

लोक कला में अभिव्यक्ति का पक्ष नैसर्गिक एवं अकृत्रिम होता है, इसीलिये उसका रूप सरल और हृदयग्राही होता है। यह जीवन के प्रत्येक पहलू में समायी हुई है और प्राचीनता तथा आधुनिकता के बीच की कड़ी है।[13] शास्त्रीय कला में लोक कला से

 ISSN- 2350-0530(O) ISSN- 2394-3629(P)

10-E

प्रेरणा लेकर नये रूपों का विकास हुआ है। जिसका कारण यह है कि लोक कला में कुछ अत्यंत सशक्त और प्रभावी रूप निरन्तर चले आ रहे है। यह मूल उर्जा आदिवासी और लोक चित्रकारों में सहज ही पायी जाती है, जिसे बड़े-बड़े चित्रकार वर्षों की साधना से हासिल करते हैं। पिकासो और हुसैन ने अनेकानेक वर्षों कला उपासना कर यह सहज उर्जा प्राप्त की। इसी सहजता के परिणाम स्वरूप उनकी एक-एक रेखा मूल्यवान सिद्ध हुई है। अतः लोक कला के अभिप्राय आधुनिक कलाकारों के लिए कला साधना का एक लक्ष्य रहे है, जिन्हें पाने के लिये वो वर्षों की साधना कर सहजता के इस सोपान तक पहुंचने में समर्थ हो सके हैं।

गोदना शरीर पर की जाने वाली चित्रकला है। अगर शरीर पर अंकित किये जाने वाले इन अभिप्रायों को कागज या भित्ति पर चित्रांकित किया जाये तो ये किसी आधुनिक चित्रकार की पेंटिंग से कम नहीं लगते। आधुनिक युग बाजारवाद से पूरी से प्रभावित है। इसी कारण कलाएं भी बाजारवाद के प्रभाव से मुक्त नहीं हैं। लोक-संस्कृति लोक कलाओं में समय के साथ-साथ कुछ न कुछ जुड़ता या घटता ही रहता है। कहने का पर्याय यह है कि समय-समय पर उसका रूप बदलता रहता है। बाहरी प्रभाव भी लोक कलाओं पर पड़ा है, जिसे नाकारा नहीं जा सकता। ऐसे में बेहद जरूरी हो जाता है कि नवीन परिस्थितियों में लोक कलाओं पर पड़ रहे प्रभाव का परत दर परत अध्ययन किया जाए।[14]

समकालीन अवधारणा में कलाओं को समग्रता के साथ देखा जा सकता है। कलाकार की व्यक्तिगत अनुभूतियां उसके विचार और उसका प्रस्तुतिकरण ज्यादा महत्वपूर्ण हो गया है। आदिवासी एवं लोक कलाकृतियों की सहजता अब आधुनिक चित्रों में देखी जा रही है। यह परिवर्तन विचारों का परिवर्तन है। रचनाकारों ने अपनी विधा से अलग जाकर सोचना प्रारम्भ कर दिया है। उसके चिंतन के केन्द्र में समाज, मानवता, तर्क इत्यादि शामिल हो चुके हैं।[15] आधुनिक कला के निर्माण में अपनी सांस्कृतिक पहचान बनाये रखने के लिये हमें अपनी परम्पराओं को विशेष महत्व देना आवश्यक है। पुरातनता में ही आधुनिकता की खोज संभव है। मानव जाति के इतिहास में नूतनता सदा पुरातनता की नींव पर खड़ी होती है। उसी के बीज से उगती है। सैकड़ों वर्षों के अनुभव से बनी प्रथाओं में बहुत कुछ ऐसा होता है, जिसे हम ग्रहण कर सकते हैं, जिसका हम नूतन की सृष्टि के लिए उपयोग कर सकते हैं। परम्परा से प्रेरणा लेकर ही हम नूतन की रचना कर सकते हैं। अगर लता ही कट गयी तो फूल की संभावना कहां रहेगी?[16]

संदर्भ

[1] शर्मा, डा0 उस0 के0/डा0 अम्बिका शर्मा, भारतीय चित्रकला का उद्देश्य पूर्ण अध्ययन, मानसी प्रकाशन, मेरठ, पृ0 73
[2] कला त्रैमासिक, संयुक्तांक, जनवरी मार्च-2002, राज्य ललित कला अकादमी, उत्तर प्रदेश की त्रैमासिक पत्रिका, पृ0 9-11
[3] कश्यप, कृष्ण कुमार/श्रीमति शशिबाला, मिथिला लोक चित्र, राष्ट्रिय पुस्तक न्यास, भारत, नई दिल्ली, पृ0 3
[4] जैतली, डा0 अजय, कलाओं का मानस मंथन, नवसाक्षर संस्थान, इलाहाबाद, पृ0 71
[5] डोसा, निर्मल, भारती की पारंपरिक कलाएं, खेद की छैनी, श्रम का हथौड़ा, राधा पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, पृ0 24-25
[6] वहीं पृ0 25
[7] वहीं पृ0 31-31
[8] रंगभूमि, कला संस्कृति के विविध आयाम, सम्पादक डा0 पंकज कुमार विशिष्ट, यश पब्लिकेशन्स, दिल्ली, पृ0 100
[9] मागे, प्राणनाथ भारत की समकालीन कला-एक परिप्रेक्ष्य, नेशनल बेक ट्रस्ट, इंडिया, पृ0 100
[10] वहीं पृ0 101
[11] गुप्ता, डा0 नीलिमा, भारत की लोक कला (छत्तीसगढ़ के संदर्भ मे) स्वाति पब्लिकेशन्स, दिल्ली, पृ0 190
[12] वहीं पृ0 191
[13] गुर्टू शची रानीः कला दर्शन, पृ0 373-378
[14] रंगभूमि, कला संस्कृति के विविध आयाम, सम्पादक डा0 पंकज कुमार विशिष्ट, यश पब्लिकेशन्स, दिल्ली, पृ0 1
[15] जैतली, डा0 अजय, कलाओं का मानस मंथन, नवसाक्षर संस्थान, इलाहाबाद, पृ0 81-82
[16] बेगड़ अमृत लालः लोक संस्कृति और नर्मदा, चौमासा, 1991, पृ0 110

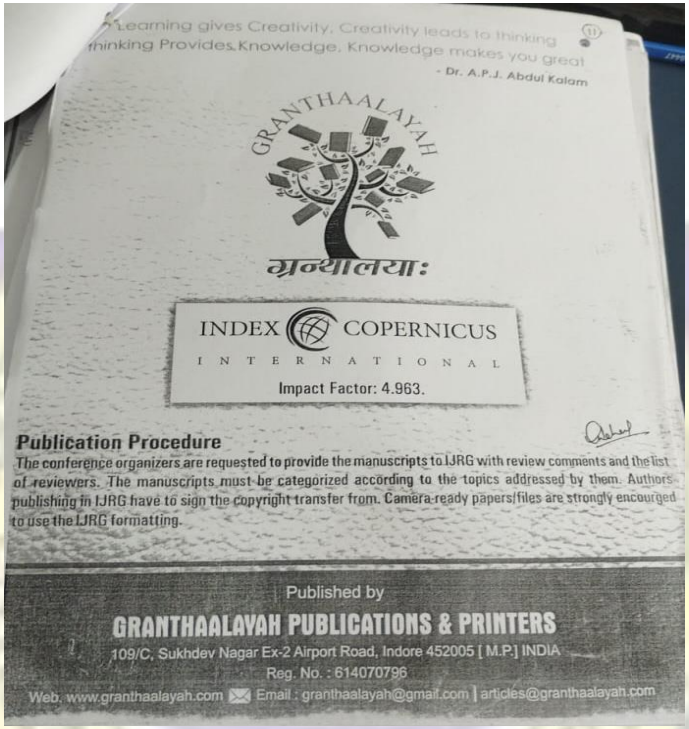

DR MAMTA SINGH

ISSN - 0975-2382

UPUEA ECONOMIC JOURNAL

A Biannual-Bilingual Refereed Journal of Economics

Volume - 15 Conference No. 15 (Section-2&3) November 2019

15th ANNUAL CONFERENCE

10th and 11th November 2019

Unemployment Situation and Policies for Employment Generation

***

Sustainable Development Goals: India's Preparation

***

Treasures of the Indian Economic Thought: Revisited in Contemporary Context

Uttar Pradesh and Uttarakhand Economic Association
(Founded By Arthik Adhyayan Evam Shodh Vikas Samiti)

Organized By
Department of Economics,
D.S.B. Campus, Kumaun University, Nainital, Uttarakhand.

11. Online Shopping: A Way towards Consumerism (A Study of Meerut District) — 339
Ranju Narang & Neena Batra

12. Impact of Micro Finance on Income Generation in Uttar Pradesh: A District Level Comparative Analysis of MFIs and SHGs — 344
Aparna Tripathi & Vandana Dwivedi

13. Inter-Industry Firm-Level Analysis of Textile Industry in India: With reference to Employment and Wages — 348
Sandeep Kumar Baliyan

14. Stratagem of Dr. B.R. Ambedkar on Scattered & Small Holdings Farm Labour and Rural Progress — 354
Ritesh Jaiswal & Devanshu Vikram Singh

15. Kautilya's Views on Taxation: Their Relevance for Contemporary India — 358
Parul Jain

16. In Contemporary Context a General Comparison between the Philosophy of Mahatma Gandhi & Pandit Deendyal — 362
Mamta Singh & Kavita Garg

17. Gram Panchayat Development Plan (GPDP) - A Step towards Strengthening the Sustainable Rural Governance — 366
Manveen Kaur & R.K. Gulati

18. Sustainable Development Goals: A Way Forward to MDGS — 370
Urjaswita Singh & C.B. Singh

19. Government Policies and Initiatives for Gujjar Tribe of Jammu and Kashmir: A Study of Udhampur District — 373
Jugal Kishore

20. Informal Economy in India — 376
Bushra Khalid

21. Status of Microfinance in India: A State Wise Analysis — 380
Sunil Kumar Singh

22. Micro, Small and Medium Enterprises (MSME): Wheel of Sustainable Development — 384
Preeti Mishra

23. Does Rising Public Borrowing support Inclusive Growth in India? — 388
Archana Gupta & Dr. Swati Jain

24. लघु एवं कुटीर उद्योग:भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए जीवंत और गतिशील क्षेत्र — 392
विश्वनाथ पाण्डेय एवं पदम एस0 बिष्ट

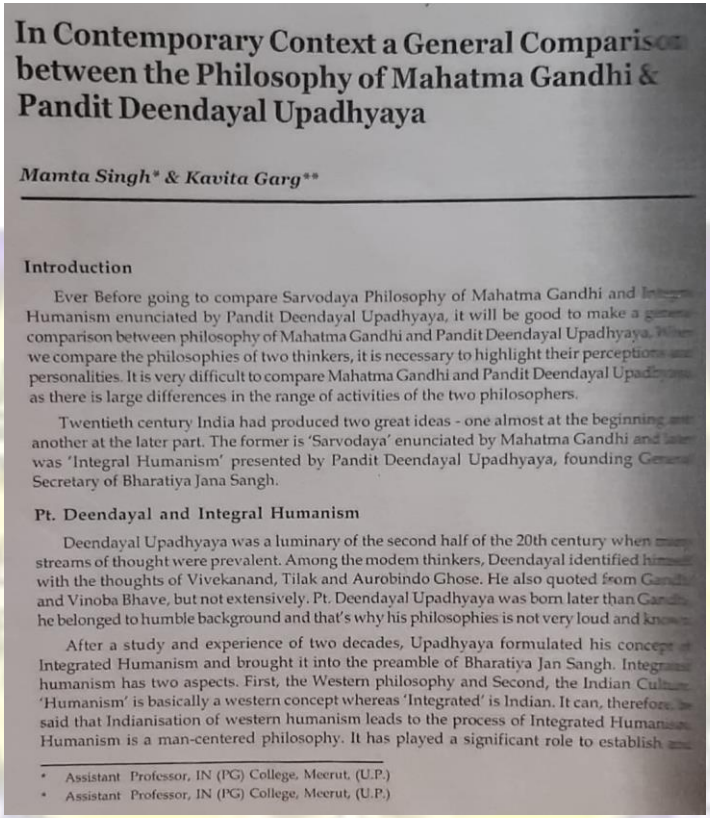

In Contemporary Context a General Comparison between the Philosophy of Mahatma Gandhi & Pandit Deendayal Upadhyaya

Mamta Singh & Kavita Garg***

Introduction

Ever Before going to compare Sarvodaya Philosophy of Mahatma Gandhi and Integral Humanism enunciated by Pandit Deendayal Upadhyaya, it will be good to make a general comparison between philosophy of Mahatma Gandhi and Pandit Deendayal Upadhyaya. When we compare the philosophies of two thinkers, it is necessary to highlight their perceptions and personalities. It is very difficult to compare Mahatma Gandhi and Pandit Deendayal Upadhyaya as there is large differences in the range of activities of the two philosophers.

Twentieth century India had produced two great ideas - one almost at the beginning and another at the later part. The former is 'Sarvodaya' enunciated by Mahatma Gandhi and later was 'Integral Humanism' presented by Pandit Deendayal Upadhyaya, founding General Secretary of Bharatiya Jana Sangh.

Pt. Deendayal and Integral Humanism

Deendayal Upadhyaya was a luminary of the second half of the 20th century when many streams of thought were prevalent. Among the modem thinkers, Deendayal identified himself with the thoughts of Vivekanand, Tilak and Aurobindo Ghose. He also quoted from Gandhi and Vinoba Bhave, but not extensively. Pt. Deendayal Upadhyaya was born later than Gandhi, he belonged to humble background and that's why his philosophies is not very loud and known.

After a study and experience of two decades, Upadhyaya formulated his concept of Integrated Humanism and brought it into the preamble of Bharatiya Jan Sangh. Integrated humanism has two aspects. First, the Western philosophy and Second, the Indian Culture. 'Humanism' is basically a western concept whereas 'Integrated' is Indian. It can, therefore, be said that Indianisation of western humanism leads to the process of Integrated Humanism. Humanism is a man-centered philosophy. It has played a significant role to establish and

* Assistant Professor, IN (PG) College, Meerut, (U.P.)
* Assistant Professor, IN (PG) College, Meerut, (U.P.)

DR SAPNA SHARMA

ISSN 2230-8652

शोध-पत्रिका

साहित्यामृतम्

SAHITYAAMRITAM

(संस्कृत-हिन्दी)

वार्षिकी | अंक-10 | दिसम्बर 2019

प्रधान सम्पादिका :
डॉ० साधना सहाय
पूर्व प्राचार्या
इस्माईल नेशनल स्नातकोत्तर महिला महाविद्यालय, मेरठ।

सम्पादिका :
डॉ० दीपा त्यागी
अध्यक्षा, हिन्दी विभाग
इस्माईल नेशनल स्नातकोत्तर महिला महाविद्यालय, मेरठ।

प्रबन्ध सम्पादक :
डॉ० संजीव त्यागी
डी०ए०वी० कॉलिज, मुजफ्फरनगर

डॉ० सोम्या सिंघल
एम०एस०सी०, एम०फिल, पी० एच-डी

सम्पादक मंडल

डॉ० अनिल राय
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

डॉ० बीना शर्मा
महानन्द मिशन हरिजन महाविद्यालय, गाजियाबाद

डॉ० भारतेन्दु पाण्डेय
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

सी० एल० त्रिपाठी
सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, बनारस

Sapna Sharma

अनुक्रमणिका

1. **आदिवासी लोक साहित्य में लोकगीत व नृत्य**
डॉ0 दीपा त्यागी, शोधार्थी-ममता

2. **नागार्जुन के उपन्यासों में नारी के विविध रूप**
डॉ0 बीना शर्मा, शोधार्थी-वीणा शर्मा

3. **काल विभाजन एवं नामकरण के पीछे का इतिहास**
डॉ0 विजय बहादुर त्रिपाठी

4. **प्रभा खेतान के साहित्य में निज अस्मिता का स्वर**
डॉ0 अलूपी राणा

5. **संस्कृत साहित्य में नारी संस्कृति**
कु0 अनुराधा

6. **ज्ञान योग की सात अवस्थाएँ**
डॉ0 सविता वशिष्ठ

7. **आचार्य कौटिल्य के अर्थशास्त्र में वर्णित धार्मिक एवं नैतिक व्यवस्था तथा वर्तमान में इसकी प्रासंगिकता**
डॉ0 सपना शर्मा

Sapna Sharma

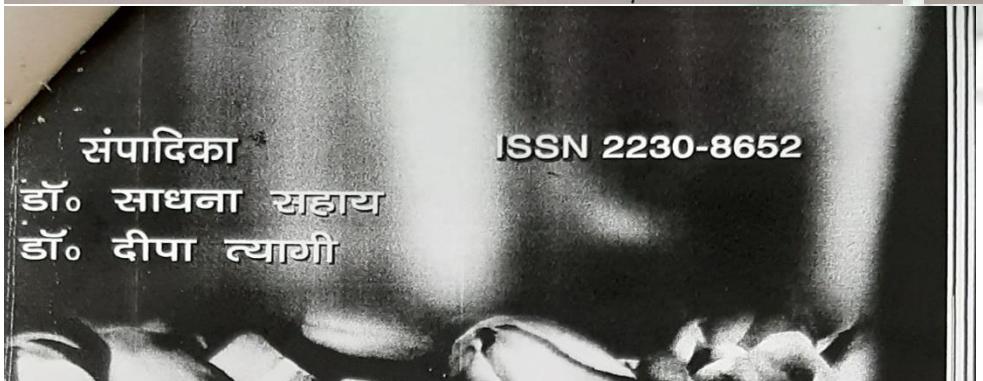

7

आचार्य कौटिल्य के अर्थशास्त्र में वर्णित धार्मिक एवं नैतिक व्यवस्था तथा वर्तमान में इसकी प्रासंगिकता

डॉ0 सपना शर्मा
प्रवक्ता (संस्कृत विभाग)
आई0एन0एम0 (पी0जी0) कॉलिज, मेरठ

भारतीय संस्कृति जीवन में उच्चतम मूल्यों को महत्त्व देती है। मनुष्य के वे समस्त गुण जो उसकी चित्तवृत्तियों को ऊँचा उठाने में सहायक हो, 'मानवीय मूल्य' कहलाते हैं। भारतीय संस्कृति आध्यात्मिकता और नैतिक मान्यताओं की सुदृढ़ नींव पर स्थित है। भारतीय चिन्तकों ने मनुष्यों को उनके सही कर्त्तव्यों का बोध कराने वाले नैतिक नियमों को ही 'धर्म' की संज्ञा दी है। 'धर्म' का शाब्दिक अर्थ 'धारण करना' है। सद्गुण धारण करके सत्कर्म करना ही 'धर्म' है। 'धर्म' वह है जो मनुष्य के चरित्र और भावनाओं को परिष्कृत कर उसे नैतिकता की ओर ले जाये। धर्म मानव मूल्यों के प्रति सचेत करता है तथा पथभ्रष्ट होने से बचाता है। धर्मो में धारण किया हुआ धर्म ही मानव की रक्षा करता है। धर्म और नीति परस्पर घनिष्ठता संयुक्त है। वस्तुतः दोनों को पृथक्-पृथक् नहीं किया जा सकता क्योंकि जो नैतिक दृष्टि से उचित है वही धार्मिक है और जो धर्म की दृष्टि से उचित है– वही नैतिक है। मानव कल्याण ही दोनों का एक लक्ष्य है। धर्म आदेश देता है और नीति उचित-अनुचित का ज्ञान कराती हुई सुमार्ग की ओर ले जाती है– 'नयनातनीतिरूच्येत'। नैतिकता ही एक आदर्श समाज तथा जीवन का अनिवार्य तत्त्व है जिसके अभाव में एक सभ्य एवं सुसंस्कृत राष्ट्र की कल्पना भी असंभव है।

आचार्य कौटिल्य के अर्थशास्त्र का अवलोकन करने पर ज्ञात होता है कि उन्होंने प्रतिष्ठा धर्म की मान्यताओं एवं नैतिक मूल्यों के प्रति गहन आस्था प्रदर्शित की है। उन्होंने कूटनीति का वर्णन करते हुए भी धर्म तथा नैतिकता पर बल दिया है। आचार्य कौटिल्य का उद्देश्य विशाल साम्राज्य की स्थापना करना था किन्तु लोक कल्याण की भावना की नीति भी उनमें विद्यमान थी। उन्होंने न केवल राजा प्रत्युत् समाज के समस्त वर्गों के व्यक्तियों हेतु कर्त्तव्य एवं आचरण से सम्बंधित निर्देशों को प्रस्तुत किया है जिनका विस्तृत वर्णन इस प्रकार है–

Sapna Sharma

DR BABITA SHARMA

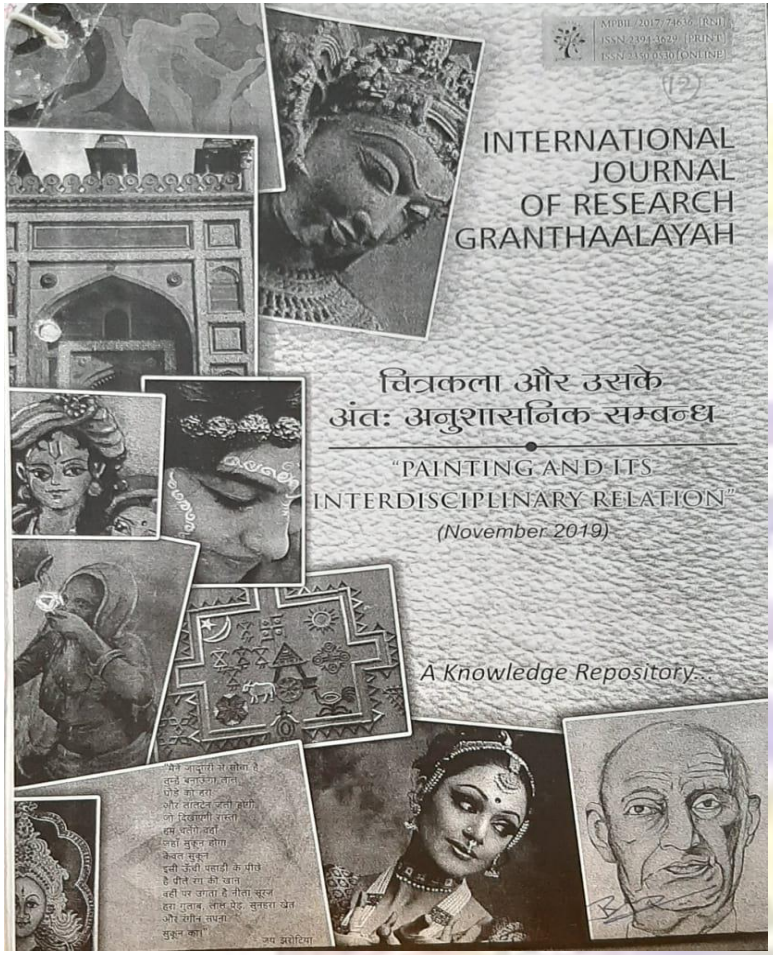

53.	नृत्य में मूर्तिकला व चित्रकला के तत्वों का सौन्दर्य	डॉ. सुचित्रा हरमलकर	122-123
54.	पारम्परिक कला-संस्कृति से प्रेरित प्रयोगधर्मी कलाकार	डॉ. अर्चना रानी	123-127
55.	राजस्थान के समकालीन कलाकारों पर लघु चित्रकला का प्रभाव	डॉ. इन्दु जोशी, कमल किशोर कश्यप	127-128
56.	आदिवासी और लोक कलाएँ	श्रीमती आकांक्षा गुप्ता	129-131
57.	वर्तमान कालीन भारतीय कला-समकालीन कला के संदर्भ में	सचिन केसरवानी	131-133
58.	मुगल बादशाह जहाँगीर कालीन चित्रकला	प्रो. सुनीता जैन	133-135
59.	लोक कला का रचनात्मक अध्ययन साँझी के सन्दर्भ में	राकेश कुमार	135-136
60.	सामाजिक विचारार्थ कला	डॉ. रीतिका गर्ग	136-137
61.	भारतीय चित्रकला की विविध तकनीक	डॉ. बबीता शर्मा	138-141
62.	ललित कला में राष्ट्र चिंतन एवं बाजार की माँग	आलोक कुमार जायसवाल	141-143
63.	भोपाल में चित्रकला शिक्षण एक अध्ययन	अंकिता जैन	144-147
64.	कला, कलाकार और समाज	प्रज्ञा केसरवानी	147-150
65.	TRICKS AND TECHNIQUE WITH OOPS (OIL ON PAPER SCHOOL)	Rajendra Bhatia	151-161
66.	REFLECTION OF SOCIETY IN THE REFERENCE OF PAINTINGS	Prof. (Dr.) Pooja Gupta	161-164
67.	PAINTING EPOCH AND SENSE: A FORMAL INSPECTION	Dr. Tina Porwal	164-166
68.	TRENDS IN CONTEMPORARY PAINTINGS	Dr. Alka Khade, Vivek Nimbolkar	167-170
69.	DIGITAL TECHNIQUES AND ART	Dr Avinash Dube	170-172
70.	PLANT SYMBOLISM IN PAINTING	Dr (Smt.) Kumud Dubey	172-173
71.	IMPORTANCE OF DRAWING IN SOCIAL DEVELOPMENT OF PERSONS IN SOCIETY	Dr. Sudha Jain	173-176
72.	THE ORIGIN OF INDIAN PAINTINGS AND THE EMERGENCE OF MINIATURE SCHOOLS OF PAINTING IN INDIA	Dr. Seema Tiwari	177-179
73.	THE RISE OF DIGITAL ART	Dr. Sonali Gupta (Jain)	179-181
74.	EXPERIENTIAL LEARNING: INCLUSIVE ART EDUCATION FOR JOYFUL LEARNING	Prashant Thote, Rajesh Kumar Sen	182-183
75.	PORTRAYAL OF WOMAN IN THE CAVE PAINTINGS OF AJANTA	Shubha Tripathi, Dr. Beena Jain	183-187
76.	DIGITAL TECHNIQUES OF PAINTING	Abhilasha Jaiswal	188-190
77.	COLOUR SPECTRUM	Dr. Asha Gaikwad	190-191

ISSN- 2350-0530(O) ISSN- 2394-3629(P)

भारतीय चित्रकला की विविध तकनीक

डा. बबीता शर्मा [1]
[1] असिस्टेंट प्रोफेसर, चित्रकला विभाग, आई. एन. पी.जी. कालिज, मेरठ

मानव के जन्म से लेकर आज तक कला उसके साथ परछाई के समान चलती रही। ईशवर ने अपनी समस्त कलाओं के द्वारा सृष्टि की रचना की है। उसकी सभी कलाओं के अन्तरस में सजीवता मुख्य आकर्षण का केन्द्र बिन्दु रही। ईशवर की बनायी कलाकृतियां भी स्वयं में एक सम्पूर्ण कला के रूप में प्रतिष्ठित है। मानव ईशवर की सर्वश्रेष्ठ कला है। जिसमें समस्त कलायें एक माला में मोतियों के समान पिरोई गयी, जो कि समय-समय पर मानव द्वारा संसार को समर्पित होती रही और सदा अपने सौन्दर्य से संसार को सुशोभित करती रही है।

कलाकार सदैव नवीनता की खोज में रहता है। यह सत्य है-एक ही प्रकार की कलाकृतियों को देखते-देखते मानस ऊबने लगता है, नवीनता के लिए आकुल हो उठता है। कलाकार तो और जल्दी ही अधीर हो जाता है। आधुनिक कला ने तीव्र गति से जो नये-नये मोड़ लिये है, जितनी जल्दी-जल्दी एक के बाद दूसरी कला तकनीके आती और जाती रही है, ये इस तथ्य के ज्वलंत उदाहरण हैं। प्राचीन ग्रीक कलाकारों ने अपनी अनुपम प्रतिज्ञा से यर्थाथ को आदरण में परिष्कृत करके कला को यह अनुपम लालित्य प्रदान किया जो आज तक के कला इतिहास में अभूतपूर्व है। उनकी कलाकृतियों से उत्प्रेरित होकर इटली के नवजागरण कालीन चित्रकारों ने चित्रों और मूर्तियों का सृजन किया।

दर्पण तुल्य यर्थाथ को प्रस्तुत किया। समस्त यूरोप में उनका वैभव फैला, इतना अधिक कि देखते-देखते कलाकार ऊब गये। नवीनता के लिए व्याकुल हो गये। कलाकृतियों के स्वरूप में परिवर्तन होने लगे। उन्नीसवीं सदी में कैमरे के अविष्कार ने रही-सही कसर भी पूरी कर दी। प्रतिस्पर्धा देखकर कलाकारों ने कैमरे की क्षमता से परे नवीन यर्थाथ का सृजन करने का अभियान उठाया। नवीन दिशाओ की खोज की अतः नवीन सत्यों पर आधारित नाना प्रकार की कलाकृतियों का बहुत भारी संखया में सृजन किया। शैलियों का वैविध्य इतना अधिक है कि उसकी सूक्ष्म विलक्षणताओं को बिना देखे कभी-कभी उनका पारस्परिक भेद बतलाना भी कठिन हो जाता है। आधुनिक कला की ये नयी तकनीके जहां कला जगत में नवीनता प्रदान कर रही है वहीं मानव जीवन से जुड़े विभिन्न क्षेत्रों में भी अपना योगदान दे रही है। ये नवीन तकनीके भिन्न है-

पटचित्रकला- पटचित्र भारतवर्ष की उत्कृष्ट श्रेणी का आदरण है। उन्नीसवीं शताब्दी के अंत तक सारहीन जीवन शक्ति के कारण चित्रकला अपेक्षित सी हो गयी थी। चित्रकला के ज्ञान से वंचित शिल्पीओ के द्वारा अंकित किये गये चित्रों में भारतीय कला की रीति एवं प्रणाली की पुनरावृत्ति क्षीण हो चुकी थी, इंसमें सजीवता पूरी तरह लुप्त हो चुकी थी। पारिवारिक जीवन में उसका कोई मेल नहीं रह गया था। इधर गुप्त युग को प्राचीन आदरण चित्रकला में कलाकार के अन्तःकरण की प्रेरणा रहा करती थी। इसलिए विषय वस्तु के निर्वाचन में एकांगीपन का न होना स्वाभाविक ही था। गुप्त युग की गुहा चित्रावली ने बुद्ध की जीवनी एवं उस युग के जीवन की घटनाओं को आधार मानकर प्रतिष्ठा प्राप्त की।

विज्ञापन कला- आज व्यक्ति सुबह से रात्रि तक अपने विज्ञापनों से घिरा महसूस करता है जो किसी न किसी रूप में कला का ही परिवर्तित रूप है। सुबह उठते ही समाचार पत्रों, पत्रिकाओं मे विज्ञापन को देखता है, घर के बाहर निकलने पर सड़क पर होर्डिंग पर चित्रित कला, वॉल पेंटिंग, पोस्टर या अन्य किसी न किसी रूप से कला विज्ञापन नजर आते हैं। किसी भी कार्य को प्रभावी व सृजनात्मक ढंग से करना कला है। प्राचीन काल से ही विज्ञापनों को एक कला के रूप में माना गया है। विज्ञापन में सृजनात्मकता के साथ-साथ प्रभावों का विशेष योगदान रहता है। विज्ञापन की सृजनात्मक योग्यता से ही सम्प्रेक्षण के प्रभावशाली उपाय प्राप्त होते है। आधुनिक युग में भी वैज्ञानिक पद्धतियों के प्रयोग ने विज्ञापन में सृजनात्मकता को और अधिक प्रभावशाली बनाया है। विज्ञापन द्वारा उत्पादन या सन्देश को कलात्मक दृष्टी से प्रस्तुत किया जाता है जिसमें विभिन्न क्षेत्रों के कला विशेषज्ञों एवं सृजनात्मकता का रंगों के संयोजन, शब्दों, सन्देश और चित्रों के निर्माण में विशेष योगदान रहता है। जिसके कारण विज्ञापन की कलात्मक प्रस्तुती उपभोगता को प्रभावित करती है। एक विज्ञापन आकर्षित करने वाला एवं प्रभावी तभी बनता है जब उसमें कलात्मक बोध होता है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि विज्ञापन ने उद्योग, विज्ञान एवं व्यावसायिक विषेशताओ के होते हुए भी यह एक कलात्मक अभिव्यक्ति है।

कम्प्यूटर कला- विज्ञान के साथ-साथ कला के क्षेत्र में नवीनतम सामग्री है- कम्प्यूटर। कम्प्यूटर में फोटो कॉपी व कोरल के द्वारा नवीन प्रभावों को उत्पन्न कर इच्छानुसार प्रभाव लाकर अपनी कृति का रूप बदला जा सकता है। इसमें इच्छानुसार टैक्सचर, संयोजन, ज्यामितीय रचना, सतह विभाजन आदि अध्ययन कार्य भी किए जा सकते है। 'कोरल' के द्वारा 'बुक कवर' व विजिटिंग कार्ड आदि अनेक कार्यों को व्यवसाय के रूप में भी चलाया जा रहा है। आज दृश्य व श्रृव्य माध्यमों का प्रयोग दैनिक जीवन का अंग बनने लगा है। समाचार पत्रों से, सिनेमा, फोटोग्राफ आदि में प्रकाशन, संयोजन, रंग, आकार अन्य

DR ANJU BALA

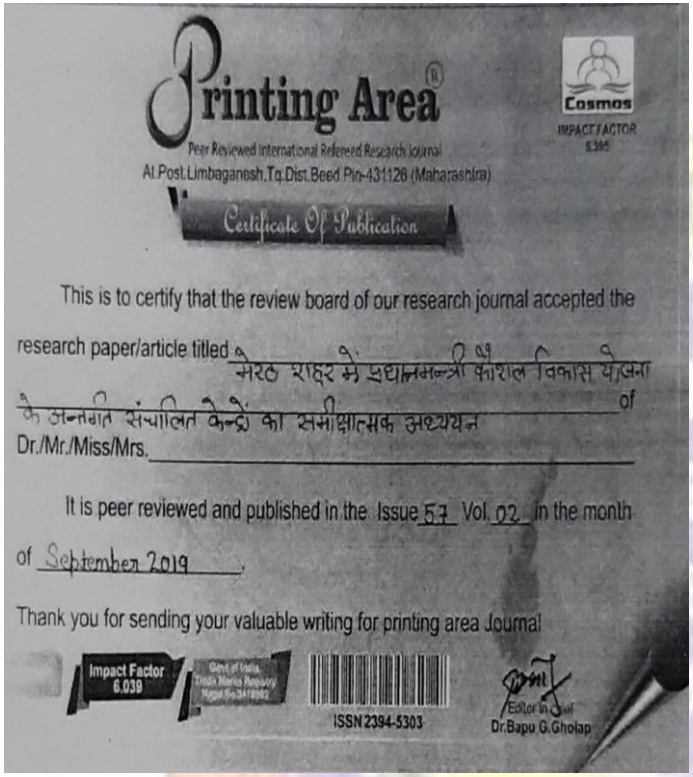

Printing Area®

Peer Reviewed International Refereed Research Journal
At Post. Limbaganesh, Tq.Dist.Beed Pin-431126 (Maharashtra)

Cosmos IMPACT FACTOR 5.395

Certificate Of Publication

This is to certify that the review board of our research journal accepted the research paper/article titled मेरठ शहर में प्रधानमन्त्री कौशल विकास योजना के अन्तर्गत संचालित केन्द्रों का समीक्षात्मक अध्ययन of Dr./Mr./Miss/Mrs. ____________

It is peer reviewed and published in the Issue 57 Vol. 02 in the month of September 2019.

Thank you for sending your valuable writing for printing area Journal

Impact Factor 6.039

Govt of India, Trade Marks Registry

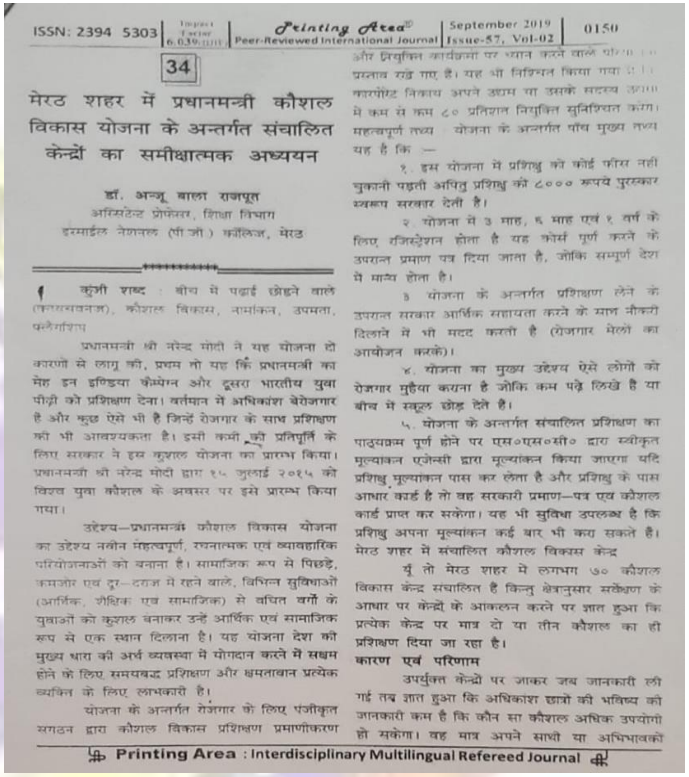

ISSN 2394-5303

Editor In Chief
Dr.Bapu G.Gholap

34

मेरठ शहर में प्रधानमन्त्री कौशल विकास योजना के अन्तर्गत संचालित केन्द्रों का समीक्षात्मक अध्ययन

डॉ. अन्जू बाला राजपूत
असिस्टेन्ट प्रोफेसर, शिक्षा विभाग
इस्माईल नेशनल (पी.जी.) कॉलिज, मेरठ

कुंजी शब्द : बीच में पढ़ाई छोड़ने वाले ([illegible]), कौशल विकास, नामांकन, उपमता, फ्लैगशिप

प्रधानमन्त्री श्री नरेन्द्र मोदी ने यह योजना दो कारणों से लागू की, प्रथम तो यह कि प्रधानमन्त्री का मेक इन इण्डिया कैम्पेन और दूसरा भारतीय युवा पीढ़ी को प्रशिक्षण देना। वर्तमान में अधिकांश बेरोजगार है और कुछ ऐसे भी है जिन्हें रोजगार के साथ प्रशिक्षण की भी आवश्यकता है। इसी कमी की प्रतिपूर्ति के लिए सरकार ने इस कुशल योजना का प्रारम्भ किया। प्रधानमन्त्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा १५ जुलाई २०१५ को विश्व युवा कौशल के अवसर पर इसे प्रारम्भ किया गया।

उद्देश्य—प्रधानमन्त्री कौशल विकास योजना का उद्देश्य नवीन महत्वपूर्ण, रचनात्मक एवं व्यावहारिक परियोजनाओं को बनाना है। सामाजिक रूप से पिछड़े, कमजोर एवं दूर–दराज में रहने वाले, विभिन्न सुविधाओं (आर्थिक, शैक्षिक एवं सामाजिक) से वंचित वर्गों के युवाओं को कुशल बनाकर उन्हें आर्थिक एवं सामाजिक रूप से एक स्थान दिलाना है। यह योजना देश की मुख्य धारा की अर्थ व्यवस्था में योगदान करने में सक्षम होने के लिए समयबद्ध प्रशिक्षण और क्षमतावान प्रत्येक व्यक्ति के लिए लाभकारी है।

योजना के अन्तर्गत रोजगार के लिए पंजीकृत संगठन द्वारा कौशल विकास प्रशिक्षण प्रमाणीकरण और नियुक्ति कार्यक्रमों पर ध्यान करने वाले [illegible] प्रस्ताव रखे गए है। यह भी निश्चित किया गया है कि कारपोरेट निकाय अपने उद्यम या उसके सदस्य उद्यम में कम से कम ८० प्रतिशत नियुक्ति सुनिश्चित करेगा। महत्वपूर्ण तथ्य : योजना के अन्तर्गत पाँच मुख्य तथ्य यह है कि :—

१. इस योजना में प्रशिक्षु को कोई फीस नही चुकानी पड़ती अपितु प्रशिक्षु को ८००० रूपये पुरस्कार स्वरूप सरकार देती है।

२. योजना में 3 माह, 6 माह एवं १ वर्ष के लिए रजिस्ट्रेशन होता है यह कोर्स पूर्ण करने के उपरान्त प्रमाण पत्र दिया जाता है, जोकि सम्पूर्ण देश में मान्य होता है।

३. योजना के अन्तर्गत प्रशिक्षण लेने के उपरान्त सरकार आर्थिक सहायता करने के साथ नौकरी दिलाने में भी मदद करती है (रोजगार मेलों का आयोजन करके)।

४. योजना का मुख्य उद्देश्य ऐसे लोगों को रोजगार मुहैया कराना है जोकि कम पढ़े लिखे है या बीच में स्कूल छोड़ देते है।

५. योजना के अन्तर्गत संचालित प्रशिक्षण का पाठ्यक्रम पूर्ण होने पर एस०एस०सी० द्वारा स्वीकृत मूल्यांकन एजेन्सी द्वारा मूल्यांकन किया जाएगा यदि प्रशिक्षु मूल्यांकन पास कर लेता है और प्रशिक्षु के पास आधार कार्ड है तो वह सरकारी प्रमाण–पत्र एवं कौशल कार्ड प्राप्त कर सकेगा। यह भी सुविधा उपलब्ध है कि प्रशिक्षु अपना मूल्यांकन कई बार भी करा सकते है।

मेरठ शहर में संचालित कौशल विकास केन्द्र

यूँ तो मेरठ शहर मे लगभग ७० कौशल विकास केन्द्र संचालित है किन्तु क्षेत्रानुसार सर्वेक्षण के आधार पर केन्द्रों के आकलन करने पर ज्ञात हुआ कि प्रत्येक केन्द्र पर मात्र दो या तीन कौशल का ही प्रशिक्षण दिया जा रहा है।

कारण एवं परिणाम

उपर्युक्त केन्द्रो पर जाकर जब जानकारी ली गई तब ज्ञात हुआ कि अधिकांश छात्रो की भविष्य की जानकारी कम है कि कौन सा कौशल अधिक उपयोगी हो सकेगा। वह मात्र अपने साथी या अभिभावकों

27) 'आँगन पाख्य' में बिखरते परिवार की त्रासदी
डॉ. एकनाथ श्रीपती पाटील, कोल्हापुर ||114

28) डिजिटल इंडिया में नवाचार की भूमिका
डॉ. राजेश हंसदा, हजारीबाग ||118

29) डॉ भीमराव अम्बेडकर एवं उनके सामाजिक न्याय
सरिता कुमारी, हजारीबाग ||124

30) प्राचीन भारत के साथ वदेशी देशों का धर्म तथा संस्कृति समन्वय
डॉ. सौरभ, हजारीबाग ||129

31) महिलाकानून एवं न्याय व्यवस्था
डॉ. शान्ति हस्सा केरकेट्टा, हजारीबाग ||134

32) मुक्तिबोध के काव्य में सामाजिक चिंतन का यथार्थ
दीपाली कुजूर, वर्धा ||140

33) रामचरितमानस मे शैक्षिक विचारधारा
डॉ. (श्रीमती) उषा दुबे, ग्वालियर ||144

34) मेरठ शहर मे प्रधानमन्त्री कौशल विकास योजना के अन्तर्गत संचालित
केन्द्रो का समीक्षात्मक अध्ययन
डॉ. अन्जू बाला राजपूत, मेरठ ||150

35) ठुमरी का उद्भव, विकास, प्रकृति एवं विशेषता
Indresh Mishra, Ghaziabaad ||152

36) शिव कुमार बटालवी : व्यक्तिगत एवं कृतित्व
यशप्रीत कौर ||156

37) मानवीय क्षमताओं के संवर्धन में शिक्षागत योजनाओं की भूमिका का एक समाजशास्त्रीय अध्ययन
हरि प्रकाश, डॉ. के. एन. दिनेश, डॉ. सुचित्रा शर्मा, दुर्ग ||158

38) भारत का पड़ोसी देशों के साथ व्यापार संबंध का विश्लेषणात्मक अध्ययन
अहमद अली खोकर ||162

39) हिंदी विज्ञापनों का अनुशीलन
डॉ. संजीवकुमार नरवाडे, हिंगोली ||167

www.vidyawarta.com/03 http://www.printingarea.blogspot.com